ISSN 2229-547X VIDEHA



'विदेह' २६१ म अंक ०१ नवम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १३१ अंक २६१)

वि दे ह *विदेह Videha विदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-

अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२. गद्य

Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।

२. गद्य

प्रणव झा

चनमा (लघुकथा)

सुधीर बाबू एकटा सहृदय, कर्मठ आ सफल आपीएस ऑफिसर छलाह. डीआईजी के पद से रिटायर भेला के बाद ओ राजनीति में आबि गेल छलाह. अपन सेवा के एकटा पैघ हिस्सा बिहार में बितेला के बाद ओ बिहार विधान सभा में विधायक आ फेर बिहार सरकार में मंत्री सेहो बनलाह. एकबेर कोनो सरकारी काज सं चंडीगढ़ गेनाइ भेलैन, संगहि पार्टी के कोनो कार्यक्रम सेहो छल.

दिन भरि के कार्यक्रम से थाकल-ठेहिआयल सुधीर बाबू सांझ काल में जखन गेस्ट हाउस के अपन कमरा में सुस्ताईत छलाह तखने अर्दली हिनका लग आबि के एकटा विजिटिंग कार्ड दैत कहलक जे श्रीमान कोई आपसे मिलने की बहुत जिद कर रहा है, नाम चनमा बता रहा है और कह रहा है की आपके बिहार के बेगूसराय जिला से है और आपसे पुराना जान पहचान है. ओ कार्ड पढ़ल लगलाह...चंद्र प्रकाश यैह नाम लिखल छल कार्ड पर आ नीचा कोनो ढाबा के पता. बड्ड मोन पाडला के बादो हिनका ऐ नाम के कोनो लोक मोन नै पड़लै, थकनी से मोनो अलसायाल छल. एक मोन त भेलै जे कहि दी जे हम नै भेंट क सकै छी अखन. मुदा फेर नै जानि की फुरेलैन जे ओ बजलाह जे अच्छा बजेने आबह ओकरा.

किछ काल में अर्दली ४५-४६ वर्षक एकटा लोक के संग नेने आयल. सुधीर बाबू ओकर चेहरो देख के कतबो मोन पाड़ला पर चिन्ह नै पेलखिन तखन ओ अपन परिचय देत सुधीर बाबू के अपन समक्ष साक्षात देख खुशी के मारल काने लागल छल. 'चनमा' उर्फ़ चद्र प्रकाश से सुधीर बाबू के कोनो विशेष जान-पहचान या सम्बन्ध छल एहन कोनो बात नै छलै. मुदा दुनू के बीच सम्बन्ध जोड़ बला करीब २५-२६ बरष पुरान एकटा घटना छल. सुधीर बाबू के आँखिक आगा ओ घटनाक्रम आब एकटा सिनेमा जेकाँ चल लागल:

बात करीब पच्चीस-छब्बीस बरष पहिने के छल जखन सुधीर बाबू बेगूसराय जिला में पदस्थापित छलाह. एकदिन जखन सुधीर बाबू गंगा दियारा एरिया में पुलिस के किछ जवान के संग छापामारी क के वापस लखीसराय जिला मुख्यालय घुरैत छलाह त रस्ता में हुंकार जीप ख़राब भ गेलैन. ओ एकटा भयंकर बरसाती राति छल. कत्तौ कोनो सुविधा नै. स्वाइत गाडी ठीक होय के संभावना भोर होय से पहिने किन्नहुँ नै छल. ताहि दुआरे ई ऑर्डर केलखिन जे रात्रि विश्राम एम्हरे कतौ कैल जाय. अस्तु बगल के गाम में किछ घर सं खाट मंगवा क ई सब एकटा किसान के पैघ सन दालान पर आराम करै लागलाह. पैघ पुलिस अ अफसर के एकटा अलगे रूतबा होय छैक आ ग्रामीण समाज में एहन सन अधिकारी के इज्जातो ततबे होइत छैक. स्वाइत एकटा ग्रामीण आबि हिनका पुछलकैन जे सर एकटा छौरा अहाँके देह-हाथ जाँते चाहैत अछि. थाकल त छलाहे, झट द हं कहि देलखिन. हिनका हँ कहते एकटा उनइस-बीस बर्षक छौरा आबि के हिनकर देह-हाथ जाँते लागल छल. नाम पुछला पर अप्पन नाम ओ बतेने छल जे सर नाम त ओना चंद्र प्रकाश अछि मुदा लोक चनमा-चनमा कहैत अछि.

कनि काल जाँतेला मातर जखन सुधीर बाबू के देह किछु हल्लुक बुझेलैन तखन ओ चनमा से पुछलखिन जे तों एहि गिरहत के एतय काज करै छहक की? ओ कहलक "नै सरकार हमरा अहाँ सं किछु कह के छल ताहि से अवसर देखल मातर पैरवी लगा अहाँ समक्ष एलहुँ अछि. हम मैट्रिक पास छी, आ बड़ड निक विरहा गाबि लैत छी, एम्हर-आम्हार, मेला-ठेला में अपन कला के प्रदर्शन क के किछु रोजी-रोटी कमा लैत छी. अहाँ सुनबै हमर गाओल गीत?"

सुधीर बाबू के हँ, कहला पर ओ लगभग आधा-पौना घंटा भरि बिरहा गाबि-गाबि के सुनेलकैन. चनमा के आवाज में सरिपहुँ बड़ड दर्द आ बुलंदी छल. स्वाइत गीत सुनैत-सुनैत सुधीर बाबू के कोरह फाटि गेलैन, नै त पुलिस क आँखि में कहिं एहिना नोर आबै! एहन गुणी कलाकार सं देह-हाथ जँताबैत आब सुधीर बाबू के मोने-मोन ग्लानि होमय लागल छल, आ ओ गीत सुनैत-सुनैत उठि बैसला आ ओकरा कहलखिन जे "तोहर गीत में बड़ड बुलंदी आ दर्द छह. आई कतेको दिन बाद तों हमरा कना देलह अछि. कह, तोरा की इनाम दी चनमा?"

किछ काल सोचला उत्तर ओ बाजल "सरकार गाँव में एकटा बाबू साहेब छै. हमर बाबू एकबेर ओकरा से किछु टाका उधार नेने छलाह. मुदा बाबू साहेब के सुईद क जाल में ओ एहन ओझरेला जे बाबू साहेब के ड्योढ़ी पर १० बरष तक बेगार खटला, खटैत-खटैत बेचारे स्वर्ग चलि गेला मुदा हुनका मुइलो मातर, बाबू साहेब के कर्ज नै ख़तम भेल. बाबू साहेब चाहैत छलाह जे बाबू के बाद आब हम ओकरा ड्योढ़ी पर बेगार खटी. हम गाम-गमाइत घुमि-घुमि विरहा गाबि किछ आमदनी करैत छी, जौं हिनका एतय बेगार खटती त पेट कोना क भरितियै. ताहि सं हम हिनकर बेगार करय से मना क देलियै. बस यैह बात हिनका लागि गेलैन आ इ हमरा पर लागि गेल छैथ. पिछला किछु मास सं हमरा खिलाफ थाना म चोर-डकैती आ लूट-पाट के कइएक टा फुइस केस दर्ज करा देल गेल अछि, तहिया स हम मारल-मारल फिरि रहल छी. एकटा हरमुनिया मास्टरजी छैथ ओ अहाँ के विषय में बतेलैथ तखन हम बड़ड हिम्मत क क आ पैरवी लगा अहाँ सोझा उपस्थित भेलहुँ अछि, आब अहाँ स एतबे गोहराबै छी जे हमरा संगे इन्साफ क देल जाउ सरकार" इ कहैत ओ सुधीर बाबू के पैर धर लगलै. सुधीर बाबू ओकरा पकड़ैत कहलखिन जे हम अहाँक व्यथा सुनल, आ आश्वस्त करै छी जे भोरे-भोर हम एहि मामला के देखबै.

भोरे लोकल थाना पर जा क सुधीर बाबू चनमा के खिलाफ दायर सबटा मामिला के रिपोर्ट मँगबा के देखलखिन. पुलिसिया ज्ञान आ आ अनुभव के बले रिपोर्ट पढले सं लगाओल आरोप सब झूठ छैक से बुझह में कोनो भांगट नै रहलैन. किएकि घटना स्थल सब फराक-फराक आ बेस दुरी पर छल मुदा केस के गवाह सब ओहि बाबू साहेब के परिवार के लोक आ नौकर-चाकर सब छल. चनमा स चोरी आ लूट के कोनो सामानो नै बरामद भेल छल. रिपोर्ट के वृहत्त निरिक्षण के बाद सुधीर बाबू थाना इंचार्ज के केस ख़तम करै के आदेश देलखिन. चनमा के इ सुनि क आँखि में खुशी के नोर आबि गेल छल.

सुधीर बाबू के चेहरा पर संतोषप्रद मुस्की छलैन्ह. ओ चनमा से कहलखिन जे आब तों आजाद छह, जे मोन से कर लेल.

ऐ पर चनमा बाजल, "सर, एतेक भेला के बाद जँ हम एहि एरिया में रहि गेलि त बेसी दिन तक ज़िंदा नहीं बचब. तैं आब हम नियाएर लेलहुँ अछि जे आब हम पंजाब चलि जायब. जीब त ओत्तहि किछु मजूरी क के कमा-खा लेब. सुधीर बाबू के जेबी में जे किछु टाका छल से ओकरा हाथ के दैत कहलखिन जे राखि ले, बाट में काज ऐतौ, किछु सहृदय गौंआ सब सेहो चन्दा क के ओकरा किछ कैंचा द देने छल.

समय के संगे सुधीर बाबू के स्मृति में ऐ घटना पर पर्दा परि गेल छलै य. आई बर्षो-बर्ष बाद चनमा स भेंट भेला पर ओ स्मृति फेर ताजा भ गेल छल. जखन चंद्रप्रकाश सुधीर बाबू के गोर लागय लेल झुके लागल त ओ ओकरा कसि क पकड़ैत गला लगाबैत कहलखिन नै-नै एहन जुलुम फेर नै, अहाँ सन कलाकार से एकबेर फेर पैर छुआब के पाप नै करब हम. एक अर्थ में त अहाँ हमर गुरुओ छी, किएकि करियर के शुरुआती समय में अहिं स हमरा ज्ञान भेंटल जे पुलिस आ अदालत में इन्साफ तखन तक संभव नै अछि जा धरि अधिकारी सब लग एकटा संवेदनशील ह्रदय नै होय आ रिपोर्ट आ गवाह से इतर सेहो किछ बात भ सकै अछि इ महसूस कर के इच्छा-शक्ति नै होय.

गरा लगैत ओ सुधीर बाबू के भरि पांझ के ध नेने छल. खुशी के मारल ओकरा आँखि से नोर ढब-ढब चुबै लागल छल. कनिक काल बाद मोन स्थिर भेला पर ओ बतेलक जे दस साल धरि एकटा रेस्टोरेंट में मजूरी केला के बाद ओ एतय अपन एकटा छोट छिन होटल(ढाबा) खोलि नेने अछि आ कैटरिंग के काज करैत अछि. अपने एरिया के एकटा लड़की से बियाहो केलक आ ओकरा दू टा बच्चो छै एकटा कॉलेज में पढ़ैत अछि आ एकटा स्कुल में. ओ कहै लागल जे ओकर परिवार हिनका हरदम याद करैत छैन आ एकबेर भेंट करै छैयत छल.

अस्तु "आई राति के भोजन तखत तोरे घर पर हैतैक" सुधीर बाबू के इ बात कहैत दुनू के चेहरा पर एकबार फेर सुखद मुस्कान आबि गेल छल, जेना दिन भैर के यात्रा के बाद सांझुक पहर आमक झोंझेर में आदित्य एकबेर फेर लालिमा बीछेने होइथ!

-

प्रणव झा
राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड,नयी दिल्ली

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

देवेश झा

हिन्दू विवाह :एक समीक्षा

प्रमुख विचार विंदु : 1॰विवाह 2॰ कर्तव्य 3॰ यौवनक आवेग 4॰ ज्ञान
5॰ प्रतिस्पर्धाक संवेग 6॰आदर्श संबंध

30 जून 2018 के दैनिक जागरण पत्र विवाहक अदभूत दर्शन करौलक । किछू घंटाक विवाहक विधि नवोढ़ा कन्याक (नायिकाक) समग्र स्वच्छन्द अस्तित्वकें शून्यक धरातल पर आनबा मे सक्षम भऽ जाइत अछ । कतऽ नवयौवनक निश्चिन्त आ मस्त जीवन आऔर कतऽ अपर पक्षक कर्त्तव्यक कारख़ाना । पत्नी एवं गृहिणीक जीवन कोनो घरक आबालबृध्द घरमें पधारल पत्नी रूपी बहूकेंदेखि परमानंदक अनुभूति करैत बजै छैथि- आब की ? कोन चिंता ? घरमे नव कनिया आबिये गेल छैथ, सब काज करबे करती आ सब भार सहबे करती, चलू मिठाई खाऊ आ खुशी मनाउ। किन्तु एतहिसँ असंतुलनक आर्त्तनादमुखरित होइत अछि जे कन्या यौवनक आवेगमे ज्ञान एवं प्रतिस्पर्धाक संवेग संबलसँ अनुस्यूत उच्चपदाकांक्षाक संग "सुपर वुमेन " बनवाक कामनासँ स्फुरित आर स्पंदित होइत रहैत छैथि ओ पत्नी तथा गृहिणीके दायित्वसँ दबिकें आहत होइत अपना जीवनके धिक्कारय लागैत छथि । जखनकि हमरा सभक मध्य कियो एहेन दुखद भाव नहि रखैत छथि ।

ते आवश्यक बुझना जाइत अछि जे पति-पत्नीक आदर्श संबंधके बुझबाक लेल विवाह एवं विवाह विधि केर पुरातन-नूतन रूपके बुझल-बुझाओल जाय।यथा-

हिन्दू विवाह धर्ममे विवहके एक प्रकारक संस्कार मानल गेल अछि, जकरा दाम्पत्य जीवनक उत्तरदायित्व कहल जा सकैत अछि। अन्य धर्मक अनुसारे विवाहके पति-पत्नीक बीच एक प्रकारक समझौता सेहो कहितेँ उचिते। ओना विवाह एक समझौता त थिकिए, मुदा विवाहोपरांत पति-पत्नीक संबंध मे अग्निके साक्षी मानिके सात फेरा लगाबैत छी जे हम सदा दुनू साथ रहब, मुदा आजुक जमाना किछु और अछि। हम अग्निके साक्षी मानि पवित्र बंधनमे त बंधि जाइत छि मुदा समयके बदलैत क्रममे किछू दिनमे एहि पवित्र संबंधक निर्वहन करयमे आजुक युवावर्ग (युवक-युवती) के किछु उकरू बुझि पड़ैत अछि।

वैदिक कालमे विवाह संस्कार एक महत्त्वपूर्ण संस्कार मानल गेल अछि । ऐहि संस्कार मे स्वागत-सत्कार, विवाहक उद्घोष, वस्त्रादि उपहार, वर- वधुक प्रतिज्ञा,कन्यादान, गुप्तदान, दहेज, पाणिग्रहण, ग्रंथि बंधन, विवाहक विशेष यज्ञ, सात-परिक्रमा, शिलारोहण, ध्रुव आ सूर्यक दर्शनक, शपथ आश्वासन आदि क्रियासँ निवृत्त होमय पड़ैत अछि । हिन्दू धर्ममे गृहस्थ जीवन मनुष्य के दायित्व निर्वहणक योग्य बनबाक एक मार्ग थीक, जाहिमे शारीरिक, मानसिक आ आर्थिक परिपक्वताक ज्ञान होइत अछि । एहि क्रममेंअनेक वरिष्ठ व्यक्ति, गुरुजन, कुटुम्ब संबंधी सबसँ धर्म, पुजा-पाठ, देवताक आवाहन, अनुष्ठान करयबाक ज्ञान प्राप्त होइत अछि ।

ओना तँ विवाह आठ प्रकारसँ सम्पन्न होइत अछि।

1. ब्राह्म विवाह :- सुयोग्य वरसँ कन्याक विवाह बिना कोनो दान दहेजक करबाक प्रथा दुनू पक्षक सहमति सँ होएब ब्राह्म विवाह कहाबैत अछि ।

2. दैव विवाह :- कोनो सेवाक भावसँ किछू मूल्य लऽ क पहिने अपन कन्याके दानमे दैत छथिन्ह ई दैविवाह भेल।

3.आर्ष विवाह :- ओना तँ ई विवाह पहिने कन्यादान बदला गौदानक रुपमे होइत छल। पहिने पुत्रीक विवाहक लेल वर पक्ष गायक दान करैत छलाह। एकरे आर्ष विवाह कहैत छी।

4. प्रजापत्य विवाह :- मैथिल संप्रदायमे कन्याक विवाह दोसर वर्गक वरसँ करा देव प्राजापत्य विवाह कहबैत अछि ।

5. गंधर्व विवाह :- दुनू पक्षक सहमतिसँ कोनो रीति रिवाजक अनदेखी करैत वर- कन्याक विवाहके गंधर्व विवाह कहल जाइत अछि। एकरा ई युगमे प्रेम विवाह सेहो कहैत छी । जेना :- दूष्यन्त-शकुन्तलाक विवाह गंधर्व विवाह कहल गेल जिनक पुत्र भरत भेलाह। हुनके नाम पर हमर देशक नाम पड़ल भारत ।

6. असुर विवाह :- वर्त्तमान सामयमे विवाहक जे प्रथा चलैत अछि, ओकरा असुर विवाह कही तँ कोनो हर्ज नहि । ज़ोर जबरदस्ती भगाक दान कार्यक दहेजक बिना विवाह असुर विवाह कहबैत अछि ।

7. राक्षस विवाह :- कन्याक सहमतिक बिना विवाह करब राक्षस विवाह कहबैत अछि ।

8. पिशाच विवाह :- कन्याक मदहोसक अवस्थामे वा वरक किछू नशाक अवस्था मे किछू खुआके लऽ जा के विवाह कराएब पिशाच विवाह कहबैतअछि ।

भारतीय सांस्कृतिक अनुसार विवाह कोनो शारीरिक आ सामाजिक अनुबंध मात्र नहि अछि अपितु दूनूक दाम्पत्य जीवनकें एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक साधनाक रुपमे दर्शाओल गेल अछि । ठीके कहल गेल अछि :- “धन्यो गृहस्थाश्रम: ”।

मिथालमे पहिने सँ विवाहक प्रथा अनेक दृष्टिकोणसँ देवताक आवहानक उपरान्त अग्निदेवके साक्षी रुपमे संकल्प आदि करकें वरुण देवसँ कृपालाभक बड़ अदृष्ट फल होएत अछि अहि दुनू शक्तिके एक हिएबाक एक गंभीर बात आर्य विवाहमे राखल गेल छल ।

विवाहक संबंधमे आर्ययूगसँ पत्नीक दिशिसँ पतिकें शतायु होयबाक प्रार्थना आ पतिक दिशसँ अभिन्न दाम्पत्य प्रेम प्रार्थना कएल गेल अछि जेना ।

राघवेन्द्रे यथा सीता विनीता काश्यपे यथा ।
पावके च यथा स्वाहा तथा त्वं मयि भर्त्तहि । आदि आदि
(धर्मविज्ञान,पृ0156)

एहिप्रकारें जेना रामक प्रति सीताक कश्यपके प्रति विनताके, अग्निक प्रति स्वाहाक, दिलीपक प्रति सुदक्षिणाक, वासुदेवक प्रति देवकीक, अगस्तक प्रति लोपमुद्राक, अत्रिक प्रति अनुसूइयाक, यमदग्निक प्रति रेणुकाक आ श्रीकृष्णक प्रति रुक्मिणीक पवित्र प्रेम छलैन्ह ओएह प्रेम आजुक वर कन्या मे मधुर प्रेम जीवनक ई प्रार्थना आर्य विवाह कालसँ अछि जे एहि युगमे संभव नहि बुझाबैत अछि ।

एतय हमर मंतव्य अछि जे विवाह एक पति पत्नीक बीच परस्पर विश्वासक एक समझौता तँ थिकिए संगे- संग एक प्रकारक कर्त्तव्य सेहो थीक जे विवाहोपरान्त व्यक्तिक जीवन शैलीमे कतेक प्रकारक उतार-

चढाव अबैत अछि जाहि मध्य मनुष्य जीवन गाड़ीक दूनुपहियाक सदृश घुमैत ई जिनगी सुख-दुखक अनुभव करैत बितैत अछि ।

विवाहक विषयमे किछू मिलल-जुलल तथ्य युक्तिसंगत बुझि पड़ैत अछि।

यथा ___

जे पहिने एक दोसरसँ आनठिया (अनचिन्ह)
पुन: क्रमश: एक दोसर पर आश्रित,
उत्तरोत्तर सौंसे (संपूर्ण) जिनगिक संग,
शनैह-शनैह परस्पर अभिन्न अपनामे,
एक उदात्त आनंदयुक्त मधुर स्पर्श,
अकस्मात् अपनामे रुष्ट नोक- झोंक,
उच्चावच मति पर चलैत बढ़ैत विरक्ति-,
विभेद-तलाकक किनार तक।
कतहु जिद आ कतहु मानक अहम भाव,
तथापि रकम-रकम दुनु निकट सूत्रमे बन्हैत एक पुष्प माल,
इ मधुर अज्ञातसँ ज्ञातक दिशामे,
चलैत प्राणान्त पर्यन्त समय साध्य यात्रा,
कनिया वरक इ कटु मधुर संबंध कखनहु,
अचार कखनहु तिक्त चटनी तँ संगहि मधुर,
रसायनक शाही भोग कखनहु लावण्य कखनहु नीम,
सब कीछु मिली भौतिक जगतक रुपें परिणत होइत अछि ।
काव्यक नवरश रुचिर भोगमे,
दु:खहुमे आनंद, परमानंद जाहिमे व्याप्त,
दुखज जीवनक सुख ।

पुन: विवाह थीक

एक आश विश्वास मिलनमे आनंद,
समाजमे जीवनक समर्पण,
भल हो ओहि नवोढ़ा नारि केर,
जे आनक लेल अपनाके त्यागि देलैथ,
अपना लेलैथ, सर्वथा अनभिज्ञके,
अपना आँचर मे समा लेलैथ।
ताहिना धन्य छैथ ओ पुरुष सिंह,
जे नवागता अनचिन्हारि अबला पर,
स्नेहिल विश्वास करैत अपना घर धरा,

समग्र ऐश्वर्य आ स्वयंके सौपि देलैथ ,
आओर की कहू-वाह रे विवाह, आह रे विवाह ।

-देवेश झा
प्राध्यापक, मैथिली विभाग
एन0 डी0 कॉलेज, रामबाग ,
पुर्णिया ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

डॉ कैलाश कुमार मिश्र

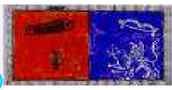
फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीकमनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना

डॉ कैलाश कुमार मिश्र[1]

लोकक सँसार अनंत महासागर जकाँ अछि। लोक जखन मिथिलाक लोक हो अथवा मैथिलिक लोक हो तऽ एकर विस्तार कल्पना सँ बाहर भऽ जाइत छैक। मिथिलाक लोकक जड़ि छथि मैथिलानी। हुनक जीवन आइओ लोक सँ छनि, लोक सँगे छनि। आजुक भौतिक आ वैश्विक समाज मे सेहो मैथिलानी लोक कँ धेने छथि: लोक मैथिलानी सँ बढैत अछि, मैथिलानी लोकक गति सँग गतिमान छथि। गति मुदा दिशाहीन नहि अछि। गति एहेन अछि जे जड़िसँ जुड़ल अछि। ओकरा उड़ब, घुमब, दौड़ब, बाहर-भीतर करब नीक लगैत छैक मुदा ओ अन्ततः अपन जड़ि लग बेर-बेर आबि जाइत अछि। ठीक ओहिना जेना प्रवासी चिरै एक वर्ष मे 40,000 किलोमीटर अपन पारिस्थितिकी सँ दूर उड़ला, घुमला आ प्रवास केलाक बाद पुनः अपन भूमि अर्थात मूल पारिस्थितिकी मे आबि जाइत अछि।ओहिना जेना सूरदास (1478 – 1573) केर जहाजक चिरै बेर-बेर उड़लाक बाद जहाज पर अबैत रहैत अछि:

"जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आबै"

मिथिलाक अथवा आजुक वैश्विक युग मे मैथिलक लोकक प्रथा, परम्परा, खान-पान, बिध-बेबहार, गीत-नाद, अनुष्ठान, पूजा-पाठ, वृत-पाबनि, खिस्सा-पिहानी, फकड़ा, सब किछु अधिकांशतया मैथिलानी बचा कऽ रखने छथि। ताहू समय मे जहिया हुनका पढबाक स्वतंत्रता पुरुष जकाँ नहि छलनि अथवा नाम मात्र महिला कँ छलनि तहियो इ सब लोक परम्परा कँ अपन भावना – प्रेम, विरह, वेदना, कष्ट, यातना, ज्ञान, उद्वेग, शोषण, दोहन, आर्थिक बिपन्नता, पुरुषक उत्पात, आदि – व्यक्त करबाक पब्लिक स्पेस केर रूप मे व्यवहार करैत छलीह। ओ स्पेस एहेन स्पेस छल जाहि मे हिनकालोकनि कँ अपन कथ्य व्यक्त करबाक स्वछंदता छलनि, बल्कि एखनो छनि। पुरुषक कोनो दखलन्दाज़ी ओहि स्पेस पर नहि छलैक आ ने आइओ छैक।इ बात कनि गंभीर लिखा गेल आ मानवाधिकार सँ शुरू होइत नारी स्वतंत्रता, नारीवाद आ स्त्री विषयक अध्ययन, विवेचन दिस टघरि गेल। बात अनेड़े बहुत पैघ स्वरुप लऽ सकैत अछि। ओना एहि बात पर मंथन आ घमर्थन केर



जरुरत अपन मैथिल समाज मे अछि लेकिन ताहिलेल इ प्लेटफार्म हमरा उचित नहि लागि रहल अछि। तखन की हो? किछु नहि, बात कें लोकक जाग्रत मनःस्थिति मे राखि आगा बढ़ि जाइ। जखन अर्धजाग्रति सँ पूर्ण जाग्रति दिस ध्यान जेतनि तऽ अहि पर विचार शुरू हएत। विचारक घमर्थन असगरे नारी नहि करती, पुरुष सेहो ओहि भाव, इतिहास, पितृसत्तात्मक समाजक सँरचना आ ओहि सँरचना मे कालक अनुरूप परिवर्तन आदि लेल उदार हेताह आ स्त्री-पुरुख दूनू मिलि जीवनक गाड़ीक दू पहिया बनि एकर सम्यक निदान दिस अग्रसर हेताह।

बात पर अबैत छी जे कोना लोकक एक विधा फकड़ाक माध्यम सँ मैथिलानी अपन सब तरहक मनोभाव कें अदौ सँ व्यक्त करैत आबि रहल छथि। फकड़ा कें 'कहबी', 'लोकोक्ति' सेहो कहल जाइत छैक। सबसँ पहिने इहो जानब आवश्यक जे फकड़ा'क अर्थ की भेल? एकर कोनो सर्वमान्य परिभाषा सेहो भऽ सकैत अछि की? सर्वमान्य परिभाषा अछि तऽ मैथिली लोक सँसारक फकड़ा ओहि वैश्विक परिभाषा सँग कतऽ धरि चलि पेबा मे सक्षम अछि?

फकड़ा खांटी लोकक वस्तु थिक लोकक उक्ति अर्थात "लोकोक्ति"। लोकक कहब अर्थात "कहबी"। लोक पुरान फकड़ा कें सहेजने रहैत अछि आ नवक निर्माण करैत ओकरा ठोसगर आधार दैत रहैत अछि जाहि सँ आजुक गढ़ल फकड़ा भविष्य मे सार्वभौमिक बनि सकय।सँस्कृत मे "लोकोक्ति" अलंकारक एक भेद सेहो मानल गेल अछि। अंग्रेजी मे फकड़ा अथवा लोकोक्ति कें Proverb कहल जाइत छैक। ताहि ज्ञाने अंग्रजी Proverb केर परिभाषा किछु अहि तरहें करैत अछि:

"A proverb is a saying without an author."

एकर अर्थ भेल फकड़ा एहेन उक्ति अछि जकर कोनो रचनाकार नहि होइत छथि। मैथिली लोक मे व्याप्त फकड़ा कें देखला सँ इ ज्ञात होइत अछि जे मैथिलिक फकड़ा अपन स्वरुप मे एहि सँ अधिक व्यापक अछि। हमरालोकनि अनेक एहनो फकड़ाक प्रयोग करैत छी जकर रचनाकारक नाम हमरा सबकें ज्ञात रहैत अछि: गोनू झा, विद्यापति (1352-1448), तुलसीदास (1511-1623), मीराबाई (1498-1557), कबीरदास (1398- ?) आदि। रामचरितमानस सँ अनेक दोहा कें मिथिला आ मिथिला सँ बाहर फकड़ा'क रूप मे व्यवहार होइत अछि। जेना कि

"यहाँ न लागै राउर माया"

अथवा

"लंका निसिचर निकर निवासा

यहाँ कहाँ सज्जन केर बासा"

इ दूनू तुलसीदासक *रामचरितमानस*सँ लेल गेल अछि।

अहि तरहें

"पुरुखक नहि विश्वासे"

"एकसर तारा कियो नहि देख

लिखल कुमास अमंगल लेख"

"भनहि विद्यापति सुनू हे सुनयना

सब बेटी सासुर जाथि"

महाकवि विद्यापतिक रचित पद सँ लेल गेल अछि।

किछु फकड़ा गाम विशेष आ स्थान विशेष मे प्रचलित होइत अछि। ओहि फकड़ाक निर्माण मे गामक कोनो विशेष घटना अथवा ओहि घटना सँग व्यक्ति विशेषक नाम जुड़ल रहैत अछि। उदाहरण लेल मधुबनी जिलाक अरेड़ गाम मे 55 वर्ष पहिने नाथ बाबू नामक एक आशु कवि आ सभालोचन भेलाह। ओ अपन प्रत्युत्पन्नमति लेल विख्यात छलाह। ओ किछु-किछु एहेन पदक रचना केलनि जे फकड़ा बनि गेल। सब फकड़ा हुनक नाम सँ जानल जाइत अछि। नाथ बाबू केँ तीन बीघा खेत छलनि। एकबेर ओ अपना खेत मे मौथा घास उखाड़ैत छलाह। बाट चलैत गामक लोक पुछि देलकन्हि:

गामक लोक: "नाथ! की करैत छी?"

नाथ:

"नाथ बाबू छथि काल गिरहस्त

तीन बीघा केर जोता

सबहक खेत मे धान उपजैत अछि

नाथक खेत मे मौथा"

तहिया सँ इ फकड़ा प्रसिद्ध भऽ गेल:

"सबहक खेत मे धान उपजैत अछि

नाथक खेत मे मौथा"

अहि तरहें मिथिलाक अधिकांश गाम मे किछु ने किछु लोक भेल छथि जे फकड़ा निर्माण केने छथि आ ओ फकड़ा गाम मे प्रचलितं अछि। ओहि फकड़ा सँग ओकर निर्माता सेहो गामक लोकक कंठ मे रचल बसल छथि। उदाहरण हमरा लग अनंत अछि मुदा विषय सँ विषयांतर नहि होई ताहिं आगा बढब जरुरी।

वृहद् हिंदी कोश मे लोकोक्ति केर परिभाषा कनि विस्तार सँ भेटैत अछि:

"विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सँक्षिप्त, लोकप्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं, जिनका प्रयोग किसी बात कि पुष्टि, विरोध, सीख तथा भविष्य-कथन आदि के लिए किया जाता है।"

एहि सँ एक बात दिस स्पष्ट सँकेत इ भेटैत अछि जे हमरा लोकनि अपन मिथिला मे उपलब्ध फकड़ा के देखैत एक स्थानीय अथवा काजक परिभाषा बना ली। इ परिभाषा हम अपन ज्ञान, मानवशास्त्र, लोकविद्या (फोकलोर) मे प्रशिक्षण आ मिथिला सँ प्राप्त फकड़ाक सँचयन आ ओकर सँरचना के आधार पर गढ़बाक यत्न कऽ रहल छी:

"मैथिली फकड़ा जकरा लोकोक्ति सेहो कहल जा सकैत अछि, लोकक द्वारा प्रचलित एहेन कथन अछि जे पौराणिक कथा, ग्रन्थ, धर्मशास्त्रक दृष्टान्त, घटना विशेष सँ विकसित शिक्षा, हास, परिहास, मनोभाव, दुःख-दर्द, प्रेम, अपनत्व, लिंग भेद, जातीय अथवा सामुदायिक स्वाभाव आ गुण, छोभ, वैराग्य, उदासी भाव, प्रकृति सँ तारतम्य, जड़िसँ जुड़ाव, पूर्वज सँ सिनेह, ज्ञानक सँचरण, आदि भाव व्यक्त कएल जाइत अछि।"

फकड़ा कँ स्वरुप कँ अगर गंभीर बनि देखी तऽ स्पष्ट हएत जे फकड़ा'क उद्धरण देमय बला लोक ओहि सँग व्यक्ति अथवा परिस्थिति कँओहिना सीब लैत अछि जेना कोनो महिला सुई मे ताग घुसा ओहि सँ कोनो वस्तु अथवा कलाक निर्माण करैत अछि। तीनू __सुई, ताग आ वस्त्र __आपस मे एना गुथा जाइत अछि जे तीनूक अलग-अलग अस्तित्व ताकब दुष्कर। तीनूक समग्र अस्तित्व सँ कला बनैत छैक। सएह भेल फकड़ा। फकड़ा कें एकाएक उमडल मनोदशाक सम्प्रेषण सेहो कहल जा सकैत अछि जाहि मे सम्प्रेषण कँ अधिक प्रमाणिक आ प्रभावोत्पादक बनेबा लेल उद्धरणक मदति लेल जाइत छैक।

कनि फकड़ा केर स्वरुप आ ओकर अनेक रूप पर विचार सेहो करक चाही। मिथिला मे व्याप्त फकड़ा कँ स्वरुप आ उपलब्धता देखैत कहल जा सकैत अछि जे फकड़ा कँ चारि भाग मे विभक्त कएल जा सकैत अछि:

(क) वैश्विक फकड़ा
(ख) अखिल भारतीय स्वरुपक फकड़ा
(ग) मिथिलाक फकड़ा
(घ) स्थानीय फकड़ा

आब कनि उपर्वर्णित फकड़ाक स्वरुप पर विचार करैत छी।

(क)वैश्विक फकड़ा

वैश्विक फकड़ा, जेना कि नाम सँ स्पष्ट अछि, एहेन फकड़ा भेल जे समस्त विश्व मे प्रचलित अछि। अहि तरहक फकड़ाक प्रयोग मैथिली मे मूल फकड़ा कँ अनुवाद कए होइत अछि। उदाहरण हेतु:

Rome was not built in a day। -“रोमक निर्माण एक दिन मे नहि भेल”

Child is the father of a man।- बच्चा पैघ लोकक पिता होइत अछि

Necessity is the mother of invention।- “आवश्यकता अविष्कारक जननी होइत अछि”।

वैश्विक फकड़ा अपन वैश्विक स्वभावक कारणे आ सांस्कृतिक आदान-प्रदानक कारणे मैथिली आ आन भाषा आ सँस्कृति मे सदैव प्रयुक्त होइत रहल अछि। लोकक विभिन्न देश मे भ्रमण, दोसर देश आ सँस्कृतिक मध्य आदान-प्रदान, साहित्य आ भाषाक अध्ययन आदि एकर फैलाव आ व्यवहारक कारण बनैत छैक।

(ख) अखिल भारतीय स्वरुपक फकड़ा

अहि तरहक फकड़ा समस्त भारत आ ताहू मे हिंदी बहुल क्षेत्र मे प्रयुक्त होइत अछि। मिथिला मे सेहो ओकर मूल रूप मे एकर प्रयोग होइत अछि। कखनोकल भाषाक अनुवाद सेहो कऽ देल जाइत छैक। किछु उदाहरण देखैत छी आ ओकर विवेचना करैत छी:

ना राधा को नौ मन घी होगा ना राधा नाचेगी __नहि राधा के नौ मोन घी हेतनि ने राधा नचती।

ऊंट के मुँह मे जीरा __“ऊंटक मुँह मे जीरक फोड़न”

ऊपर के उदाहरण मे मूल हिंदी फकड़ा के मैथिली मे अनुदित कए कहल गेल अछि।

आब दोसर देखू:

“लेना देना कुछ नही मुहब्बत एक चीज़ है।”

“का वर्षा जब नदी सुखाने/ समय चुक पुनि क्या पछताने”

“कबिरा खरा बाजार मे लिए लुकाठी हाथ/ जो घर ज़ारे आपना चले हमारे साथ”

“ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय”

“बड़े मिया तो बड़े मिया/ छोटे मिया सुभानअल्लाह”

“मिया की जुत्ती मिया का सर”

उपरोक्त सब फकड़ा अपन भाषा आ ओकर सँस्कार सँग मिथिला मे अबैत अछि। मैथिली भाषी एकर प्रयोग अपन भाषा आ व्यवहार मे एकर मूल रूप मे बिना कोनो जोड़-तोर केने, बिना कोनो अनुवाद कें करैत छथि आ एकर भाव सेहो बिना कोनो झंझट कें स्पष्ट होइत जाइत छैक। अखिल भारतीय फकड़ा मे कोनो भाषा जेना मगही, भोजपुरी, नेपाली, बंगाली, अवधी, उर्दू आदिक फकड़ा आबि सकैत अछि। अखिल भारतीय कहक अर्थ हिंदी मात्र नहि लागक चाही।

(ग) मिथिलाक फकड़ा

मिथिलाक फकड़ा कहब कें तात्पर्य भेल जे कोनो फकड़ा जे समस्त मिथिला क्षेत्र मे बाजल जाइत अछि (ओ देवघर, सँथाल परगना, दुमका, भागलपुर, मुंगेर सँ लऽ कऽ नेपालक मैथिली भाषी क्षेत्र धरि पसरल लोकक फकड़ा), व्यवहरित होइत अछि से फकड़ा। इ फकड़ा सब कमोवेश एक स्वरुपक अछि। अहिमे यद्यपि एक बातक सम्भावना भऽ सकैत अछि जे किछु फकड़ा जे अखिल मिथिलाक स्वभावक अथवा प्रकृति कें अछि तकर सँचयन सब मैथिली भाषी क्षेत्र सँ लोक परम्परा सँ लिखित परम्परा मे नहि भेल हो। अगर से नहि भेल अछि तऽ मैथिली साहित्य आ सँस्कृति के शोधकर्मी एवं साहित्यजीवी लोकनि एहि बात कें गंभीरता सँ लेथि आ समस्त मिथिला क्षेत्र सँ लोक परम्परा मे व्याप्त फकड़ा सबहक सँचयन कए ओकर सँरचना आ व्यवहार पर शोध करथि।

(घ) स्थानीय फकड़ा

स्थानीय फकड़ा ओ फकड़ा भेल जे कोनो विशेष गाम अथवा ओकर अगल-बगल मे कोनो घटना विशेष, अथवा कोनो व्यक्ति विशेष द्वारा रचल गेल हो आ ओहि परोपट्टा मे लोक व्यवहार मे प्रचलित हो। स्थानीय फकड़ा के सम्बन्ध मे एक बात कहब अनिवार्य जे कालक यात्रा सँग नहु-नहु महत्वपूर्ण फकड़ा किछु समयक बाद अखिल मिथिला आ बाद मे अखिल भारतीय आ कखनो काल अंतिम डेग फानैत वैश्विक फकड़ा सेहो बनि जाइत अछि। स्थानीय फकड़ा केर उदाहरण शुरू मे देल गेल अछि ताहि एकरा फेरो सँ देमाक दरकार नहि अछि।

अहि तरहें दू बात एक सामान्य पाठक लेल स्पष्ट भऽ गेल:

- पहिल, फकड़ा की अछि, एकर परिभाषा विशेषरूप सँ मैथिली भाषा आ सँस्कृतिक सन्दर्भ मे की होबक चाही।
- दोसर, मैथिली सँस्कृति मे प्रचलित फकड़ा के कतेक श्रेणी मे बांटी देखल जा सकैत अछि।

आब अहि प्रारम्भिक जानकारीक बाद अहि लेख कें आत्मा अर्थात फकड़ा द्वारा मानवी या मैथिलानी के मनोदशाक सम्प्रेषण कोना होइत अछि। कोना ओ सब अपन मोनक भाव, उतार-चढ़ाव, नीक-अधलाह, प्रेम, वेदना, विरह, सामाजिक स्थिति, उमंग, दुःख, आर्थिक बिपन्नता, आदि कें व्यक्त करैत छथि। व्यक्त करब

एक बात भेल आ ओहि अभिव्यक्ति कें बुझब आ ओकरा सँग आत्मसात करब दोसर बात। इ दूनू बात अगर मैथिली फकड़ा आ नारी मनोदशा के देखब तऽ भेटत। भाव अधिकांश अवस्था मे एकक अथवा व्यक्ति विशेषक नहि अपितु समस्त नारी समाज लेल, तऽ कखनोकाल एक वर्ग विशेषक नारी समाज लेल होइत अछि। समाजक सँरचना जे आइ तीव्र गति सँ बदलि रहल अछि ताहि मे सामाजिक-सांस्कृतिक-इतिहासिक आ जेंडर डिस्कोर्स कें ध्यान मे रखैत अहि विषय पर गहन शोधक दरकार अछि। हम अपन सीमित ज्ञान आ साधन कें हिसाब सँ अहि पर किछु लिखबाक यत्न कऽ रहल छी।

लिखबा सँ पहिने इ स्पष्ट कऽ देनाइ आवश्यक जे समाज बदलि रहल अछि। परिवर्तन अपन गति पकड़ि रहल अछि। परिवर्तन सँग मैथिल मानशिकता सेहो बदलि रहल अछि। लोक बेटा बेटीक विभेद कम कऽ रहल छथि। सब क्षेत्र मे आन समाज जकाँ मिथिलाक धिया सेहो प्रगतिक पथ पर साधल डेग दऽ रहलि छथि। हालहि मे मिथिलाक एक बेटी भारतीय वायु सेना मे पायलट कें रूप मे चयनित भेलीह अछि। हुनकर चयन पर समस्त मैथिल समाज अपना आपकें गर्वान्वित अनुभव कऽ रहल अछि। ओहि धिया कँचारू दिस सँ शुभकामना भेटि रहल छनि। इ घटना बदलैत मनःस्थितिक परिचायक अछि। एकर अर्थ इहो नहि जे सब किछु ठीक भऽ गेल अछि। विश्व समुदायक बाते छोड़ी दी, भारतवर्ष मे सेहो हम सब बहुत समुदाय, समाज, वर्ग आ राज्य सँ नारी सँचेतना, विकास मे एखनो बहुत पछुआएल छी।

समाजक सँरचना देखला सँ एहेन सन लगैत अछि जे समाज मात्र बेटा लेल बनल अछि। ककरो अनेक बेटा भेलैक तऽ ओ भागवंत आ एकर बिपरीत किनको अनेक बेटी भेलनि तऽ बड़ड अधलाह। अहि स्थिति मे समाज ओहि बेटी सभक तुलना पिलुआ सँ करैत कहैत अछि जे फलां स्त्रिगन अथवा पुरुख कें "खद-खद बेटी" छनि।स्मरणीय तथ्य इ अछि जे खद-खद शब्द पिलुआ लेल कएल जाइत अछि।

बातक अंत अतए नहि होइत अछि। सम्मर गीत जे बेटीक बिआह सँ पहिने गाएल जाइत अछि मे माय अपन व्यथा बतबैत कहैत छथि, 'बहुत भऽ गेल कोनो ढंगक बर नहि भेट रहल अछि। बेटीक जन्म पहाड़ भऽ गेल! की करी कि नहि?' बेटी मायक दुःख सँ द्रवित होइत अपन नारी होबाक अवस्था सँ पश्चाताप करैत गीत आ फकड़ा कें मादे कहैत छथि 'माय, अनेड़े हमरा जन्म कथिलेल देलहुँ? अहि सँ बढियाँ तऽ इ रहैत जे हमरा अर्थात बेटीक जन्म सँ पहिने चालीस पचास मरीच बुकि कऽ खा लितहुँ जकर झांस सँ बेटी गर्भहि मे तुबि जाइत आ जिनगी भरि लेल धियाक सँताप सँ मुक्ति अहाँकें भेट जाइत!

"कथि लए आहे अम्मा धियाक जनम देल

खैतहुँमरिच पचास

मरिचक झाँस सँ धिया दूरि जैतय

छुटि जाइत धियाक सँताप"

समाज एहि मानशिकता मे जीबैत अछि जे बेटी घर मे अधिक भेलाक अर्थ भेल धनक क्षय आ लक्ष्मीक प्रस्थान। एक फकड़ा मे अहि बातक स्पष्ट प्रमाण भेटैत अछि:

“विप्र टहलुआ मेष धन

या बेटीके बाढ़ी

ताहू सँ धन नहि घटए

करू पैघ सँ राडि”

इ फकड़ा प्रमाणक सँग डंकाक चोट पर कहैत अछि जे ब्राम्हणक बालक कँ नौकर टहल टिकोरा करक हेतु राखब सँ, छागर-बकरी पोसला सँ आ बेटीक सँख्या बढ़ला सँ धनक क्षति होइत अछि; तकर बादो अगर सम्पति बांचि गेल तऽ अपना सँ पैघ हैसियत केर लोक सँ लड़ाई ठानि लिय, सम्पति बरबाद भऽ जेबे टा करत।

फकड़ाक विवेचना सँ लगैत अछि जे बेटी कँ लोक सिनेह करैत अछि, मुदा बेटी कोखि मे अबैक तकर कामना नहि करैत अछि। भले बेटीक सुरक्षा घिबही घैल जकाँ कएल गेल होइक मुदा ओकर प्यार आ दुलार बेटा जकाँ केल जाइत छैक। अर्थ भेल, बेटा अधिक महत्वपूर्ण। अन्यथा, बेटी कँ बेटी जकाँ दुलार किएक नहि?

“घीबक घैला जकाँ पोसलहु गे बेटी

बेटा जकाँ कएल दुलार”

मिथिला मे कोनो महिला लेल बेटाक कामना अतेक प्रबल होइत छैक, तकर उत्तर देब कठिन। एक चिरै बहुत कारुणिक स्वर उत्पन्न करैत रहैत अछि। ओहि चिरै कँ सम्बन्ध मे प्रचलित मान्यता इ छैक जे कोनो जन्म मे ओ चिरै एक मानवी छलि। ओकरा अनेक बेटा होइत गेलैक आ सब मरल गेलैक जखन कि जतेक बेटी भेलैक सब जिल गेलैक। जखन ओ महिला मरलितऽ बहुत दिन धरि ओकर आत्मा बेटा लेल भटकैत रहलैक बाद मे ओकर स्वरुप बदलि गेलैक आ ओ चिरै बनि जनम लेलक। एखनो ओकरा पूर्व जन्मक बात सब स्मरण छैक ताहिं ओ कारुणिक स्वर मे अपन व्यथा कथा कहैत रहैत अछि:

“टी टी टी तिसी तेल

बेटा भेल मरि मरि गेल

बेटी भेल जीब जीब गेल”

अगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ उपलब्ध फकड़ा सबहक विवेचन कएल जाय तऽ पता चलैत अछि जे फकड़ा तत्कालीन समाजक दर्पण अछि; समाजक ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। अहिबातक पुष्टि निम्नलिखित फकड़ा सँ होइत अछि:

“जनक नगर सँ चलली हे सीता

अम्मा देलनि रोदना पसार

के मोरा सीता लए बसिया जोगेतै

के मुख करत दुलार”

इ फकड़ा जेना भक्क सँ लोकक आँखि खोलैत हो! इ कहैत अछि जे ताज़ा, तप्पत भोजन खेबाक अधिकारी बेटा अछि, आँठि, बसिया भोजन बेटीक भाग मे लिखल रहैत अछि। बेटी जखन बिआह कँ बाद सासुर जा रहलि अछि तऽ माय कनैत सोचैत छथि, ‘आब सासुर मे हमर बेटी लेल इ बसियो अन्न कँ जोगा’क राखत आ के एकर गाल पकड़ि दुलार करतैक?’ इ फकड़ा बहुत पैघ यात्रा लेल चलि पड़ैत अछि। लड़की मायक चिंता एहि फकड़ा मादे देखू। ओ कहैत छथि जे आब हुनका बेटी लेल इ बसियो भोजन ओकर सासुर मे कँ रखतैक? कँ ओकरा सँ प्रेम सँ बजतैक? यएह सब सोचि-सोचि मायक छाती बेर-बेर फाटि रहल छनि।इ फकड़ा बतबैत अछि जे कोना लड़की सासुर जाइते देरी उत्तरदायित्वक भार सँ दबा जाइत अछि। इ फकड़ा देखन मे छोटन लगे/ घाव करे गंभीर जकाँ अछि।

एक आर फकड़ा ऊपर वर्णित फकड़ाक अर्थ स्पस्ट करैत अछि आ बेटीक बिआह भेलाक बाद सासुर गेला पर की स्थिति होइत छैक तकर खाका खीचैत छैक:

“जब डारि चलल ससुर घर देस

घरक चालनि होयबो हे”

अर्थ इ भेल जे आइ धरि जे धिया नैहर मे सुकुमारि छलीह से आब दोसर देस दोसर लोक मे जा रहलि छथि, ओतय हिनकर की गति हएत! काज करैत-करैत आ लोकक बात सुनैत-सुनैत अपसियात रहतीह। मोन चालनि जकाँ अनेक खंड मे विखन्डित भऽ जेतनि। मतलब, इ फकड़ा भविष्यक यातना दिस इशारा करैत अछि।

मिथिलाक नारी एक विचित्र मनोदशा आ परिवेश मे जीबैत छलीह। किछुके जीवन मे परिवर्तन आबि रहल छनि अधिकांश एखनो पिता, ज्येष्ठ भ्राता, श्रेष्ठ एवं अभिभावक पर आश्रित छथि अथवा हुनक निर्णय कँ बलधकेल स्वीकार करबा लेल विवश छथि। आश्चर्यक बात इ छैक जे लड़की कँ कहेन लड़का चाही आ ओकरा मोन मे की बात घुमि रहल छैक तकर वर्णन सेहो गीतगाइन सब अपन गीत आ फकड़ाक माध्यम सँ बजैत छथि:

“जखन चलला बाबा वर ताकय

आगा भए रुक्मिणी ठारि हे

कर जोड़ि मिनती करै छी यौ बाबा

सुनू बाबा मिनती हमार यौ

जुनि बाबा ताकब चोर चंडाल के

जुनि आनब तपसी भिखारि यौ”

नायिका अपना लेल अपन श्रेष्ठ सँ एक सामान्य बर जे सिनेहक अर्थ जनैत होथि कँ आकांक्षा रखैत छथि। हुनका चोर, चंडाल, लुच्चा- लफंगा अथवा कोनो नंग धरंग साधू सन्यासी नहि चाहियनि।इ फकड़ा एक महिलाक दासताक जीबैत साक्षी अछि।

फकड़ा पढ़ैत चलू आ समाजक गढ़नि देखैत चलू। फकड़ा एक-एक तह खोलैत चलत। स्थिति इ भऽ जाइत अछि जे कोनो महिला अगिला जनम मे फेरो महिला नहि बनए चाहैत छथि। दिनकर दीनानाथ सँ निहोरा करैत कहैत छथि जे आब कहियो हुनका तिरिया अर्थात नारी रूप मे जन्म नहि देथि:

“बेर-बेर अरजलौं हे दीनानाथ

दीनानाथ तिरिया जनम जुनि देहु”

पित्रसत्तात्मक समाज अपन मायाजाल मे तेना ने स्त्रिगन कँ फंसा लेने अछि जे ओ सब छरपट- छरपट तऽ करैत रहैत छथि, मुदा ओहि मायाजाल के तोड़ि कहाँ पबैत छथि! समाज सुग्गा जकाँ रटा देने छनि, रटि लेने छथि:

“बेटी ससुरे नीक की सरगे नीक”

फेर की सब मैथिलानी इ मानि लैत छथि जे कोनो विषम परिस्थिति हो, प्रताड़ना हो, शोषण हो, पति सौतिन लऽ अबैथ, भोजन सम्मान भले ने भेटए, कोनो स्थिति मे सासुर नहि छोड़ी आ नैहर के तऽ चर्चे बेकार! बेटीक डाला नैहर सँ सासुर लेल उठैत अछि आ सासुर सँ बेटीक लाशक डोली उठक चाही। फेरो एकरा समाजिक सँरचना सँगे जोड़ि देल जाइत अछि। बिआह होइते देरी नैहर मे बेटीक अधिकार समाप्त आ भाउजक वर्चस्व प्रारम्भ। अगर बिआहलि आ सासुर बसैत बेटी नैहर मे किछु दखल देलनि तऽ इ अमान्य। फकड़ा एकरा एहि तरहें प्रमाणित करैत अछि:

“घर आँगन भौजी के

छल छल करथि ननदो”

अर्थ स्पष्ट भेल आब जे बेटी बिआह सँ पूर्व पिताक घर पर अपन अधिकार बुझैत रहैत छलीह से हुनकर नहि अपितु हुनक भाउजक भऽ चुकल छनि। ओ अधिकारहीन भऽ चुकलि छथि। कोनो पुरुख ज अहि बातक अनुभव करए चाहैत छथि तऽ एकबेर इ कल्पना मात्र कऽ लेथि जे बिआहक बाद एकाएक हुनका सम्पति सँ बेदखली कऽ देल जाइत छनि, सामाजिक व्यवहार मे ओ निष्कासित भऽ जाइत छथि। फेर कहेन अवस्था मे रहि सकैत छथि। इ कल्पना मात्र हमरा सबके कष्टकारी लगैत अछि आ तकरा एखनो धरि मैथिलानी जीब रहलि छथि से कतेक दुखक बात! आ अहि बातक भान फकड़ा कोना खोलिकऽ स्पष्ट करैत कहैत अछि।

एक अवस्था एहेन होइत छैक जखन एक महिला अपना आपकेँ असहाय पबैत अछि आ लगैत छैक जे सब सँस्था, सामाजिक मर्यादा, बिआह-दान, कुल-पलिवार सब किछु बेकार छैक! लोक अनेड़े मायाक बंधन मे बन्हा जाइत अछि! इ सोच कखन होइत छैक? तखन जखन ओ प्रसवक वेदना सँ लहालोट भेल इमहर-ओम्हर ओँघरिया मारैत रहैत अछि। तखन ओकरा लगैत छैक जे अहि सँ बढियाँ ओ बिआह नहि केने रहैत आ पिता-पितामाहक घर मे जीवन भरि कुमारि बनल रहैत:

"कथिलेल बाबा बियाहलनि देलनि ससुर घर रे

ललना रे रहितहुँ बारी कुमारि दरद नहि जनितौं रे"

अनेड़े बाबा हमर बिआह करा ससुर घर भेज देलनि। नीक रहैत जे कुमारि भेल नैहर मे रहितहुँ। कम सँ कम अहि प्रचण्ड दर्द सँ बंचि तऽ जैतहुँ!

मिथिलाक सब स्त्रिगन अपना आपमें सीता देखैत छथि। हुनका सबके लगैत छनि जे सीता सँगे रामक व्यवहार उचित नहि रहलनि। अतेक कोमल सीता केँ कोना कठोर भेल राम नाना तरहक यातना देलाह! एहेन राम सँग बिआहक की लाभ? जिनगी भरि सीता केँ सुख कहाँ भेटलनि:

"राम बियाहने कोन फल भेल

सीता जन्म अकारथ गेल"

आ अन्ततः सीता केँ राम धोबी केँ कहला पर तखन घर सँ भगा देलथिन जखन सीता रघुकुलक कुल दीपक केँ जन्म देबा लेल गर्भ सँ छलीह! एहनो कहीं कतौ भेलैक अछि:

"राम बियाहने कोन फल भेल

सीताक जन्म बियोगे गेल"

बात अतए समाप्त नहि होइत अछि। कहल जाइत अछि जे जखन सीता वेदनाक अधिकता सँ भरि गेलीह आ राम हुनका बाल्मीकि आश्रम सँ लव कुशक सँग अयोध्या चलबा लेल जिद ठानि देलथिन तऽ सीता पुछि देलथिन: "हमर अयोध्या मे आब कि प्रयोजन, हमरा तऽ अहाँ निकालि देने छी?"

एहि बात पर राम उत्तर दैत छथिन: “अहाँक बिना हमर अश्वमेध यज्ञ सँभव नहि अछि।”

सीता: “फेर एखन धरि अहाँ कोना करैत रही अश्वमेध यज्ञ?”

राम: “अहाँक कोनो उदेस हमरा लग नहि छल। हम मानि लेने रही जे अहाँक निधन भऽ चुकल अछि। एहेन अवस्था मे शास्त्र इ विधान दैत अछि जे यजमान सोनाक पत्नी बना यज्ञ पर बैस सकैत अछि। हम सएह कएल। सोनाक सीता बना अश्वमेध यज्ञक वेदी पर बैसल रही।”

रामक इ बात सुनितहि सीताक करेज फाटि गेलनि। आँखी नोरा गेलनि। भेलनि, 'रामो सन पति अतेक मतलबी भऽ सकैत छथि!' भावावेश मे अबैत सीता बाजि उठलीह: “एकर मतलब इ भेल जे अहाँ हमरा अपन यज्ञक लोभे अयोध्या लऽ जेबा चाहैत छी?”

राम चुप रहला।

सीता फेरो बजलीह: “एकर अर्थ तखन इ भेल जे अहाँक यज्ञ मे हमही वाधक छी?”

राम एखनो चुपे छलाह।

आब सीता निर्णय दैत बजलीह: “ठीक छैक, हम अहाँक समस्याक तुरत समाधान करैत छी।”

राम कनि गंभीर तऽ भेलाह मुदा मौन भेल रहलाह।

सीता धरती माता दिस हाथ जोड़ि बैस गेलीह आ निवेदन केलनि: “हे धरती माँ! अहिंक कोखि सँ हमर जन्म भेल अछि। हम आब अधिक वेदना नहि बरदाश्त कऽ सकैत छी। अहाँ आब हमर उपाय तत्क्षण करू। फाटू! एखन फाटू! अतए फाटू! हमरा अपन कोरा मे सुता लिय। आब हम अहि लोक सँ उबि गेल छी!”

वनदेवी सीताक गोहार धरती माता तुरत स्वीकार केलनि। धरती मे तुरत दरार परि गेलैक। जाबेत राम सीता कें रोकैथ तावेत सीता धरती मे प्रवेश कऽ गेलीह। धरतीक पुत्री धरती मे विलीन भऽ गेलीह। धरती पुनः यथावत भऽ गेलीह। एखनो जखन कोनो मैथिलानी कष्ट सँ भरि जाइत छथि तऽ एकाएक हुनका मुँह सँ निकलि पड़ैत छनि: “फाटू हे धरती”। से कहिते ओ सीताक मिनिएचर भऽ जाइत छथि।

फकड़ा प्रकृति सँ उद्धरित सेहो होइत अछि। कखनोकाल जखन स्त्रिगन अपन सँतान आ पति सँ तंग भऽ जाइत छथि तऽ अपन तुलना काकोर सँ करैत छथि। तहिना जेना अनेक बच्चा सबके जन्म दैत काल काकोर अपन जान गमा दैत अछि तहिना मैथिलानी सब बाल-बच्चा, पति आ परिवार लेल अपन शरीर आ इच्छा कें गला लैत छथि। दुखक भार बढ़ला पर बाजि उठैत छथि:

“क़कोरबा बियान क़कोरबै खाय”

महिला मनक मनोदशा नहुँ-नहुँ अनेक तरहेँ फकड़ा मादें प्रवाहित होइत रहैत अछि। दुख मे, सुख मे, आनंदातिरेक मे, वेदनाक सघनता मे मैथिलानी स्वतःस्फूर्त होइत अपन परिस्थिति कैँ कोनो ने कोनो फकड़ा सँ जोड़ि लैत छथि। तथाकथित निम्न जाति अथवा समुदायक लोक सँ ओना तऽ तथाकथित उच्च वर्गक लोक सामाजिक मेल मिलापक दूरी रखैत छथि अथवा सीमित अवस्था मे करैत छथि लेकिन जखन प्रहसन अथवा मजाक प्रदर्शित करबाक होइत छनि तऽ ओहि समाजक स्त्री सँ साम्पियक आकांक्षा रखैत छथि आ मर्यादाक अतिक्रमण करबा मे सेहो सँकोच नहि करैत छथि। महिला सेहो बुईझ लैत छथि जे पुरुखक इच्छा आ आकांक्षा की छनि। जखन पुरुख मर्यादा कैँ त्याग करैत छथि तऽहुनका इहो भान नहि रहैत छनि जे ओ महिला हिनका गाम अथवा समाजक प्रचलित मानदण्ड पर भाउज,भावहु, पुतोहु अथवा की हेतनि! अहि क्षण ओ स्त्रिगण हुनका भाऊज सन लगैत छनि जकर बहुत मुंहतोड़ जवाब फकड़ा दैत अछि:

'रारक बहु सबहक भौजी"

अहि दशा कैँ देखैत विद्यापतिक एक पद श्मरण अबैत अछि जाहि मे अस्पृश्य सुन्नरि युवतीक पति बिदेस गेल छैक, सासु बहिर तऽछैके, ओकर आँखि मे रतौंधी सेहो भेल छैक। ओना तऽसमाजक उच्च जातिक उच्च लोक, पुरुख ओकर देह सँ सटब पाप बुझैत छथि लेकिन राति मे वएह पुरुख ओहि कामिनी सँग अपन काम पिपासा शान्त करबा लेल उताहुल छथि, ओहि क्षण लेल ओ महिला हुनक सजाति भऽजाइत छनि:

"अधियन कर अपराधहुँ साति

पुरुख महते सब हमर सजाति"

महाकवि विद्यापति आगा बढ़ैत कहैत छथि:

"भनहि विद्यपति एहि रस गाब

उकितहुँ अबला भाव जगाब"

विद्यापति तऽअतेक आगा बढ़ैत ई तक बाजि लैत छथि जे लोक अनेड़े हुनका रसिक कवि कहैत छनि, प्रेमक-श्रृंगार, मिलन-अभिसार आ रतिक्रिया कैँ कवि कहैत छनि; असली रस तऽओ शोषित आ अर्थहीन युवतीक दुखक बयान करब छनि। ओ अबलाक भाव कैँ प्रदर्शित करए बला कवि छथि:

"भनहि विद्यापति एहि रस गाब

उकितहुँ अबला भाव जगाब"

कखनोकाल स्थिति एहेन भऽजाइत अछि जे दर्द आ भावनात्मक शोषण आ दोहन सँ जखन मैथिलानी भरि जाइत छथि, हिम्मत जखन जवाब देमय लगैत छनि,माथ जखन भिन्नाय लगैत छनि, तखन ओ अपन भड़ास निकलैत बजैत छथि:

"नहुँ नहुँ मुती तऽसन्न-सन्न उठय"

उपरोक्त फकड़ा प्रदर्शित करैत अछि जे जखन चारु दिस सँ मोनमे नाना तरहक द्वन्द चलैत रहैत छनि, शोषणक अधिकता एकठाम ढ़ेर भेल जाइत छनि, एक निश्चित अवधिक बाद ओ अपन भड़ास निकालि लैत छथि। ओ कतऽकरतीह। लोकपटल पर लोक धारणाक हेतु। सएह करैत छथि।

एक अवस्था एहेन होइत अछि जखन कियोक अपन बैभव कें बारे मे अनेड़े बखान करैत छथि, ताहि क्षण किछु घोर सत्यवादी महिला कें अनेड़े फुइसक बड़ाई अथवा पदबड़ाई अनसोहाँत लगैत छनि। बात जखन बहुत आगा बढ़ि जाइत छैक तऽबाजि उठैत छथि:

"गाँरी कहलक पटोर पहिरने रही

आँखि कहलक सङ्गे रही"

उपरोक्त फकड़ा यथार्थ आ फेकब मे अंतर स्पष्ट करैत अछि। नारी मानशिकताक यथार्थ आ कल्पित मानशिकता केर द्वन्द स्पष्ट करैत अछि। एक सँ दोसरक परिस्पर्धाक विवेचन करैत अछि, समाजक मानशिकता देखबैत अछि।

कोनो महिला (अथवा विशेष अवस्था मे पुरूष) जखन व्यर्थक शोर आ अनघोल करैत छथि, अपन कृत्य (अथवा कुकृत्य) कें झपबाक यत्न मे नीक अथवा भद्र महिला कें दोख तकैत छथि तऽउचितवक्ता स्वभावक मैथिलानी हुनका पर तंज कसैत बाजि उठैत छथि:

"बट हगनी ने लजाय

उपराग देमय जाय"

गुनमंती मैथिलानी नारीक महत्व नीक जकाँ बुझैत छथि। हुनका ज्ञात छनि जे मायक भूमिका मात्र माय निभा सकैत छथि। पिता अर्थात पुरुष तऽमतलबी होइत अछि, भमरा होइत अछि। पुरुख कें सँतति सँग पत्नी सेहो चाही। महिला कें सँतति आगा किछु नहि। कोनो तरहक बात भेला पर पुरुख लेल निम्नलिखित फकड़ा पढ़ल जाइत अछि:

"माय मुइने बाप पितिया"

अर्थ भेल मायक मरैत मातर पिताक व्यवहार सँतानक प्रति बदलि जाइत छनि। पिता दोसर पत्नी केर जोगार मे लागि जाइत छथि।

पिता कतबो करुणाशील होथि मायक स्थान लेब असँभव छनि। एक फकड़ा देखु तऽअर्थ स्पष्ट भऽजायत:

"जे मायक दूध सँ नहि हएत

से बापक आंड़ चटने कतऽहएत"

ई फकड़ा जखन कखनो सुनैत छी तऽ हिंदी सिनेमाक एक गीत स्वतः श्मरण आबि जाइत अछि:

"बाप का जगह माँ ले सकती है

माँ की जगह बाप ले नही सकता

लोरी दे नहीं सकता

सो जा सो जा"

बेटी सामान्यतया मायक गुण आ बेटा पिताक गुण आ स्वभाव किछु ने किछु स्वतः ग्रहण करैत अछि। एकर प्रमाण निम्नलिखित फकड़ा सँ भेटैत अछि:

"माय गुण धी पिता गुण घोर

नहि किछुओ तऽथोड़बो थोड़"

दोसर फकड़ा माय आ बेटीक बात करैत कहैत अछि जे मायक गुण बेटी सहजे ग्रहण करैत अछि:

"भनहि विद्यापति बाँसक टोटी

जकर जेहन माय तकर तेहेन बेटी"

आब पुरुखक बारी अबैत अछि आ फकड़ा कहैत अछि जे जहिना मायक गुण बेटी करैत छथि तहिना बापक गुण बेटा ग्रहण करैत छथि:

"भनहि विद्यापति बाँसक टोटा

जकर जेहन बाप तकर तेहेन बेटा"

महिलाक़ँ जतेक अधिकार अपन पति पर रहैत छनि ततेक पुत्र अथवा पुत्री पर नहि। पतिक सम्पति आ टाका पर हुनका पूर्ण अधिकार, सर्वत्र स्वतंत्रता रहैत छनि,ने रोक ने टोक। लेकिन बेटाक सम्पति आ राशि पर मायक अधिकार एकाएक जेना सीमित भऽजाइत छनि।

अहि बातक पुष्टि निम्नलिखित फकड़ा सँ होइत अछि:

"सइयां राज अरु राज

बेटा राज मुहतककी"

पितृसत्तात्मक समाजक सँरचना लोकक मोन मे ई धारणा स्थापित कऽदेने अछि जे बेटी आ बेटीक लोक - पति आ पुत्र - आन होइत अछि, अपन नहि। यएह बात फकड़ा सेहो स्थापित करैत अछि। निम्नलिखित फकड़ा देखला सँ ई बात नीक जकाँ फ़रिछा जाइत अछि:

"धी, जमैय्या भगिना

ई तीनू ने अपना"

मैथिलानी सेहो सहज मोन सँ एकरा स्वीकार कऽलैत छथि।

वैधवयक जीवन बहुत दुःखद होइत रहल अछि। महादेब बर, भंगिया भिखारी प्रवृत्तिक वर सदैव मैथिलानी कँ विशेष रूप सँ ब्राह्मण बालिका कँ भेटैत रहलथिन्ह अछि। बेमेल बिआह एखनो कतौ-कतौ दृष्टिगोचर होइत अछि। हालहि मे हम एक विवाह मे गेल रही। लड़की बहुत सुन्दरि, देहगरि, कटगर, देखनूत रहैक। लड़का कनि दब। ऊपर सँ एक हाथ मे कनि समस्या। राति भरि कतेक बेर स्त्रिगण सब चारि पंक्ति केर गीत गबैत रहली आ पश्चाताप करैत रहलनि। गीतक दू पंक्ति हमरा जीवन भरि लेल स्मरण भऽगेल जे फकड़ा जकाँ व्यवहरित होइत रहैक:

"लोहा मे जड़ि गेल सोना

हम जिबै कोना"

ज्ञातव्य इ जे अतए लोहा बर आ सोना कनिया छैक।

प्रसँग विधवाक छल। चलू अहि दिशा मे चर्च करैत छी। वैधव्यक स्थिति बहुत खराप होइत छल। अगर इ घटना ब्राह्मण अथवा कर्ण कायस्थ अथवा आन उच्च वर्ग मे होइत छल तऽ स्थिति भयावह भऽ जाइत छल। बारह, तेरह, पन्द्रह वर्षक लड़की विधवा कतेक ठाम भऽ जाइत छलि। विधवा होइतहि पुनर्विवाहक तऽ कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल, उपर सँ ओहि लड़कीक सब सुख-सिंगार, नीक भोजन आदि छीना जाइत छलैक। कतेक ठाम तऽ विधवा कें अंग्रेजी दबाई तक ग्रहण करबाक आज़ादी नहि छलैक। ओकरा सुगधित तेल, साबुन, आदिक व्यवहार करब पर प्रतिबंध लागि जाइत छैक। ओ केश विन्यास नहि कऽ सकैत अछि, नव व्याहल बर कनियाक चुमान करब तऽ दूर, ओकरा लग ठाढ़ तक नहि भऽ सकैत अछि। जेहिना प्रथम सांझ मे असगर तारा देखब अशुभक लक्ष्ण अछि तहिना तऽ विधवा सेहो आब असगर तारा बनि गेल छथि! समस्त हाहाकार मचल अछि। यएह स्थिति कें देखैत विद्यापति लिखैत छथि:

“असगर तारा केओ नहि देख

अमंगल लेख”

विधबा पर प्रतिबंधक झड़ी लागि जाइत छनि। प्याज-लहसुन, माछ-मांस के पुछैत अछि गरिष्ट भोजन तक करबाक आज़ादी नहि रहैत छनि। हुनक जीवनक ऋतुचक्र जेना एक रंगाह भऽ जाइत छनि जाहि मे सब ठाम दुखक डंका बजैत रहैत छैक! निम्नलिखित फकड़ा के देखला सँ स्थिति स्पष्ट भऽ जाइत छैक:

“विधवा घर मे सभ दिन भादब

निरधन घर मे कातिक

राजा घर मे सभदिन अगहन

फागुन घर अहिबातिक”

अहि तरहक विपत्तिक सामना करैत विधवाक करेज कराहि उठैत छैक। कुहेस फाटि कानए लगैत अछि। आ भगवान सँ कहैत छनि कोन पापक कष्ट ओ भोगि रहल अछि? ओ अपन वेदना ककरा कहतैक:

“हे भगवान कोन कसूर विधना भेल बाम

कहब दुःख ककरा सँ”

एकर विपरीत पुरुख लेल कोनो प्रतिबंध नहि। पत्नीक निधन भेलाक बाद ओ सब किछु खा सकैत अछि। फेरो बिआह कऽ सकैत अछि। पत्नी मरलैक तऽ की भेलैक! फेर दोसर बिआह भऽ जेतैक। दोसरो पत्नी मरि गेलैक तऽ चिंताक कोनो प्रयोजन नहि, फेरो बिआह भऽ जेतैक! पत्नीक स्थिति अखरा नोनक ढेप सन होइत छैक __खसि पड़ल तऽ उठा लिय:

"नोनक ढेप खसल

उठा लेब"

अति वृष्टि आ अनावृष्टि सँ मिथिला अदौ सँ परेशान रहैत आबि रहल अछि। लोक भूखे रहैत छल। स्त्रिगणक दशा तऽ आरो दयनीय छलनि। ओ बाहर जा नहि सकैत छलीह। भीख कोना मंगती? कखनो कुअन्न, कखनो साग पात, कतेक सांझ उपास करैत जीवन चलबैत छलीह। अहि तरहक स्थितिक विभत्सता दर्शा रहल अछि निम्नलिखित फकड़ा:

"बिपत्ति जानि के आनल बजाय

अरिपन के चाउर गेली चिबाय"

स्थितिक गंभीरता देखू। घर मे स्त्रिगन नाना तरहक कष्ट सहैत रहैत छथि। अतेक खाराप स्थिति भऽ जाइत छनि जे अरिपन लेल जे चाउर राखल छनि सेहो चिबा जाइत छथि।

कोनो महिला कँ अगर कियोक अनेड़े मजाक अथवा तंग करैत छनि आ हुनका लग काजक, मूलरूप सँ गृहकार्यक तऽ ओ बाजि उठैत छथि:

"घरबला सँ फुरसत ने

देओर माँगए चुम्मा"

बाल विवाह एक समय मे बहुत पैघ समस्या बनि गेलैक। बेमेल विवाह जेना पसरि रहल छलैक। तकर विवरण कोना फकड़ा दैत अछि से देखू:

"तिरिया तेरह, मरद अठारह

कन्याक चमकए आँखि, बिआह होअय तमाम

छौड़ी बेर-बेर देखए अएना"

एक फकड़ा इ इंगित करैत अछि जे कोना महिला कुअन्न खा अपन प्राणक रक्षा करैत छथि आ कोना बूढ़ सँ बिआह कए बिआहक पतिया छोड़ा लैत छथि:

"गुडा-खुद्दी खेलौं उपास भंग भेल

बूढ़ बिआहलक कुमारि पद गेल''

बेमेल विवाहक परिणिति नीक नहि होइत छैक। स्त्रिगन जीवन पर्यन्त ओहि वेदना आ सामाजिक उपहासक पात्र भऽ जाइत छथि। अनेड़े हुनका सँ पैघ उमेरि कँ लोक- स्त्री आ पुरुख सब हुनका जेठ कहि अपमानित करैत छनि।एहने मनोदशाक चित्रण निम्नलिखित फकड़ा मे देखाएल गेल अछि:

''हम नहि बूढि गे हम नहि बूढि

बूढबा बिआहलक तें हम बूढि''

अर्थ स्पष्ट अछि, ओ महिला बूढि नहि छथि, परिस्थिति जाहि करणे हुनक विवाह बुढ़बा सँ भऽ गेल छनि ताहिं ओ बूढि छथि। उपरोक्त फकड़ा नारी मनोदशाक ओहि विशेष अवस्थाक गूढ़ मनोवैज्ञानिक सम्प्रेषण छैक।

नारी मनोदशाक अनेक परत होइत छैक। अपन कष्टक सम्प्रेषण एक महिला लोक मात्र मे लोक व्यवहार मात्र सँ कऽ सकैत छलीह। लोक व्यवहार हुनका लेल ब्लैकबोर्ड छलनि। ओ मात्र हुनक स्पेस छलनि। महिला लोक आ किछु पुरुष बच्चा मात्र हुनक श्रोता। वेदनाक अधिकता सँ जखन करेजक कुहेस फाटैत छनि तऽ स्त्रीक दग्धल छाती सँ श्राप निकलैत छनि:

''जे मोरा खेलनि खीरिया पुरिया

तिनको होइहनु नाश''

आर ओ की कऽ सकैत छलीह। हुनका लगैत छनि जे पुरुखक एहने कुकृत्य, अहँकार, निरंकुश व्यवहार सँ संसार मे अकाल, महामारी आदि भऽ रहल अछि। इ बात लोक सँ कखनोकाल मैथिली साहित्य मे सेहो अपन स्थान बना लैत अछि। बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री'' आ काशीकांत मिश्र ''मधुप''क रचना मे लोक जेना चढ़ि कऽ बजैत हो! लोक भाव साहित्यक प्रबल पक्ष बनि उठैत अछि। यात्रीक कलम नोर आ शोणितक धार बहबए लगैत अछि। नारी आ विधवा मनोदशा मे जेना ओ तह धरि घुइस जाइत छथि। एक-दू-सौ-सैकड़ा कँ पुछैत अछि, हजारक हज़ार विधवा हुनक माथ पर अपन व्यथा लेने सवार भऽ जाइत छनि। ''बिलाप'' कविता मे यात्री सत्यक अन्वेषण करैत कविता लिखैत छथि। यथार्थ चार चढ़ि बाजय लगैत अछि। कँ नहि कनैत अछि! पाठक, समाज आ कवि सब बहाबैत अछि नोरक धार:

''विधवा हमरे सन हज़ारक हज़ार

बहौने जा रहलि अछि नोरक धार

ओहि मे ई मुलुक डूबि बरु जाय

ओहिमे लोक-वेद भसिया बरु जाय

अगड़ाही लगौबरु बज्र खसौ

एहेन जाति पर बरु धसना धसौ

भूकम्प हौक बरु फटो धरती

माँ मिथिले रहिये क’ की करती!”

यात्री नहि रुकैत छथि दोसर-तेसर-चारिम विवाह करयबला बूढ़बा बर सब पर कलम उठा लैत छथि। अग्गब सामाजिक कुरीति पर प्रहार करैत रहैत छथि। नारी शोषण कँ पाठक हेतु पढबाक सामग्री बनबैत छथि। हुनक दोसर कविता “बूढा वर” सेहो एकर प्रमाण अछि। मुदा स्त्रिगन अपन बात ताबेत धरि लोक पटल मात्र पर करैत रहलनि।

जमिन्दारक शोषण सँ तंग भेल बुचनीक प्रतिनिधि बनि अपन अमर रचना “घसल अठन्नी” मे मधुप बुचनीक मुँह सँ कहा लैत छथि जे शोषण आ अन्याय कँ चलते जगत मे भऽ रहल अछि अकाल। इ लोकक अभिव्यक्ति नहि तऽ की भेल? घसल अठन्नी केर बुचनी डरल जरुर रहैत छैक लेकिन अपन बात आ श्राप दुनू व्यक्त करैत अछि:

आहा! देह तोड़ि क’ कएल काज

सुपथो न बोनि अछि भेटी रहल

तें जगमे ई पड़लै अकाल

उठबितहिं डेग लागए अन्हार

मरि जाएब एतइ

ककरा कहबै?

हित क्यो ने हमर

अनुचितों पैघ जनके शोभा

भगवान आह!”

मधुप नारी शोषण कँ देखैत छथि, अनुभव करैत छथि, अपन ह्रदय मे ओहि परिस्थिति कँ आत्मसात करैत छथि, आ कलम हुनका स्त्रिगणक स्पोकपर्सन बना दैत छनि। कविता बनि पड़ैत अछि।

मैथिली लोक परम्परा मे फकड़ा अनंत अछि विपुल निधि जकाँ। कतबो ताकि लेब तैओ बहुत रहिये जाएत। लेकिन लोक व्यवहार मे ताकब तऽ कोनो निरर्थक नहि लागत। इ भेल फकड़ाक प्रयोजन आ उपयोगिता। जखन महिला कोनो वेदना सँ द्रवित होइत छथि आ हुनक बात कियोक नहि बुझैत छनि तऽ अनायास बाजि उठैत छथि:

“गुड़क मारि धोकड़े बुझैत अछि”

इ फकड़ा कतेक सार्थक छैक तकर अनुभूति या तऽ महिला कऽ सकैत छथि अन्यथा ओ जे नजदीक सँ ओहि वेदनाक प्रत्यक्षदर्शी रहल अछि।

किछु एहि तरहक भाव निम्नलिखित फकड़ा मे कहल गेल छैक:

“समाठक माइर उखैरे बुझैत छै”

स्मरण इहो राखब जरुरी जे सब भाव अधलाहे नहि होइत छैक। मनोदशा प्रेमक सेहो होइत छैक। लोक जखन अधिक उधियाइत अछि तऽ कहल जाइत छैक:

“टिटही टेकल पहाड़”

अर्थ भेल अपन औकात सँ अधिक ने बाजी ने करी।

कतेकबेर पति पत्नी अथवा कियोक आर अपन स्वयम कँ जीवन आ प्रेम अथवा व्यवस्था मे अतेक लीन भऽ जाइत छथि जे हुनका दोसरक जीवन अथवा सामाजिक मर्यादा केर भान खत्म भऽ जाइत छनि। एहन लोक लेल निम्न फकड़ा कतेक सटीक होइत छैक:

“हम सुनरी की पिया सुनरी

गामक लोक बनरा बनरी”

उदाहरण अनेक अछि बहुत अज्ञात आ कतेको ज्ञात। सबहक समावेश केनाइ पहाड़ सन लगैत अछि। एहि पर गंभीर काज करक दरकार छैक। इ विषय अनंत महासागर जकाँ अछि। अहि पर साहित्यक अतिरिक्त समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, नारीवाद विज्ञानं, मानवाधिकार, मानवशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास आदिक शोधकर्मी के विभिन्न उदेश्य आ परिकल्पना संग काज करक चाही। इ एक अलग संसारक रचना कऽ सकैत अछि। हमर आलेख कँ अनंत महासागर मे खसल किछु बुंद मात्र मानल जा सकैत अछि जकर समय पड़ला पर अपन उपयोग भऽ सकैत अछि।

सन्दर्भ:

मिश्र, कैलाश कुमार (2017). "मैथिली लोकगीतमे नारी-दुर्दशाक चित्रण", *घर-बाहर*, वर्ष 17, अंक 61, जुलाइ-सितम्बर: 11-17.

मिश्र, कैलाश कुमार (2018). "मिथिलाम अर्थात लोक सँस्कृति: एक परिचय" *तीरभुक्ति*, वर्ष 1, अंक 1, जुलाइ-सितम्बर: 29-35।

मिश्र, पंचानन (2017). "मैथिली लोकोक्तिमे स्त्री-जीवन", *घर-बाहर*, वर्ष 17, अंक 61, जुलाइ-सितम्बर: 18-20.

वर्मा, रामचन्द्र (2009). *लोकभारती बृहत् प्रामाणिक हिन्दी कोश*. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.

यात्री, बैद्यनाथ मिश्र (--). "बिलाप", *कविता कोश*: kavitakosh.org

यात्री, बैद्यनाथ मिश्र (--). "बूढ़ा वर", *कविता कोश*: kavitakosh.org

मधुप, काशीकांत मिश्र (---) "घसल अठन्नी": गजेन्द्र ठाकुरक सँ कविता भेटल

---

[1]डॉ कैलाश कुमार मिश्र मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, मानवाधिकार, फोकलोर(लोकविद्या) आ कला इतिहास केँ विभिन्न पक्ष पर स्वतंत्र लेखन करैत छथि; अंग्रेजी, मैथिली आ हिंदी तीनू भाषा मे लिखैत छथि। भारत सरकार केँ स्वास्थ्य आ परिवार कल्याण मन्त्रालय[Department of Population Genetics and Human Development (PGHD), National Institute of Health and Family Welfare]; संस्कृति मन्त्रालय [Indira Gandhi National Centre for the Arts], अंतर्राष्ट्रीय संगठन[South-South Solidarity; Society for Health Education and Learning Package (HELP); UNESCO; UNDP; READ Global] आदि मे 27 वर्ष सँ बिभिन्न शोधपरक आ तथ्यपरक काज करबाक अनुभव छनि। यूनिवर्सिटी ऑफ़ नेब्रास्का (The University of Nebraska), जयपी यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी (Jaypee University of Information Technology), एमिटी

यूनिवर्सिटी (Amity University),स्विनबर्न यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी(Swinburne University of Technology), गुरु गोबिंद सिंह इन्द्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी (Guru Gobind Singh Indraprastha University) केर बहुत रास अकादमिक आशोध काज मे संलग्न छलाह। हिनक लगाव भारतक लोक कला, मूर्त आ अमूर्त कला, ग्राम्य आ आदिवासी जीवन, सामाजिक पारिस्थितिकी आ जीवन तंत्र, जेंडर डिस्कोर्स, मानवाधिकार, सामाजिक विकास, संस्कृति के अनेक पक्ष, इतिहास आ साहित्य सँ छनि।सम्प्रति ब्रैनकोठी आ आर.आइ.आर.के.सी.एल.आर.सी. केर चेयरमैन छथि आ किछु संस्था सभक स्वतंत्र कंसल्टेंसी करैत छथि. डॉ मिश्र मैथिली-भोजपुरी अकादमी दिल्ली कँ सदस्य सेहो छथि। हिनक सम्पर्क: Dr. Kailash Kumar Mishra, Chairman- Brainkothi; B-2/333, Tara Nagar, Old Palam Road, Kakrola, Sector 15, Dwarka, New Delhi 110078. Mob: +918076208498, Email: kailashkmishra@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१. आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-४ २. मोहनराज "गगन"- बीहनिकथा

१

आशीष अनचिन्हार

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-४

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम तँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

१

"शराबी" फिल्म केर ई नज्म जे कि किशोर कुमारजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि प्रकाश मेहारा। संगीतकार छथि बप्पी लाहिड़ी। ई फिल्म 1984 मे रिलीज भेलै। एहिमे अमिताभ बच्चन, जयाप्रदा आदि कलाकार छलथि।

मंज़िलों पे आ के लुटते, हैं दिलों के कारवाँ
कश्तियाँ साहिल पे अक्सर, डूबती है प्यार की

मंज़िलें अपनी जगह हैं, रास्ते अपनी जगह
जब कदम ही साथ ना दे, तो मुसाफिर क्या करे
यूं तो है हमदर्द भी और हमसफ़र भी है मेरा
बढ़ के कोई हाथ ना दे, दिल भला फिर क्या करे

डूबने वाले को तिनके का सहारा ही बहुत
दिल बहल जाए फ़क़त इतना इशारा ही बहुत
इतने पर भी आसमां वाला गिरा दे बिजलियाँ
कोई बतला दे ज़रा ये डूबता फिर क्या करे

प्यार करना जुर्म है तो, जुर्म हमसे हो गया
काबिले माफी हुआ, करते नहीं ऐसे गुनाह
तंगदिल है ये जहां और संगदिल मेरा सनम
क्या करे जोशे जुनूं और हौसला फिर क्या करे

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 2122 2122 2122 212 अछि। बहुत काल शाइर गजल वा नज्मसँ पहिने माहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अनिवार्य नै छै। एहि नज्मसँ पहिने एकटा शेर "मंज़िलों पे आ के लुटते, हैं दिलों के कारवाँ" (एहू शेरमे इएह बहर छै) माहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। उर्दूमे "और" शब्दक मात्रा निर्धारण दू तरीकासँ कएल जाइत छै "और मने 21" आ "औ मने 2"। एहि नज्मक संगे आन नज्म लेल ई मोन राखू। जरूरी नै जे ई नियम मैथिली लेल सेहो सही हएत।अंतिम बंदक दोसर पाँतिक अंतिम शब्द अछि "गुनाह" जाहिमे एकटा लघु अतिरिक्त अछि। ई छूट उर्दू गजलक संग मैथिली गजलमे सेहो अछि।

२

"मदहोश" फिल्म केर ई नज्म जे कि तलत महमदूजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि राजा मेंहदी अली खान। संगीतकार छथि मदन मोहन। ई फिल्म 1951 मे रिलीज भेलै। एहिमे मनहर (देसाइ), मीना कुमारी आदि कलाकार छलथि।

मेरी याद में तुम न आँसू बहाना
न जी को जलाना, मुझे भूल जाना
समझना के था एक सपना सुहाना
वो गुज़रा ज़माना, मुझे भूल जाना

जुदा मेरी मँज़िल, जुदा तेरी राहें
मिलेंगी न अब तेरी-मेरी निगाहें

मुझे तेरी दुनिया से है दूर जाना

ये रो-रो के कहता है टूटा हुआ दिल
नहीं हूँ मैं तेरी मोहब्बत के काबिल
मेरा नाम तक अपने लब पे न लाना
न जी को जलाना, मुझे भूल जाना

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 122 122 122 122 अछि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। ई बहर संस्कृतमे सेहो भुजंगप्रयात (मात्राक्रम 122+122+122+122) केर नामसँ छै। उर्दूमे एकरा “बहरे मोतकारिब मोसम्मन सालिम” कहल जाइत छै। एहि बहरपर बहुत नीक रचना अनेक भाषामे रचल गेल छै। प्रसंगवश एहिठाम हम गोस्वामी तुलसीदास जीक ई रचना (रुद्राष्टकम्) द' रहल छी............

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् |
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ||१||

एहि रुद्राष्टकम् केर छंद भुजंगप्रयात अछि। एकरा एना देखू.. नमामी 122 शमीशा 122 न निर्वा 122 णरूपं 122 आन पाँति सभकेँ एनाहिते देखि सकैत छी। हमरा द्वारा लिखल एहि सिरीजमे तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ, तेरी याद दिल से भुलाने चला हूँ, बहुत देर से दर पे आँखें लगी थी सन नज्म एही बहरपर अछि।

३

"खिलौना" फिल्म केर ई नज्म जे कि लता मंगेशकरजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि राजा आनंद बख्शी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत प्यारे लाल। ई फिल्म 1970 मे रिलीज भेलै। एहिमे संजीव कुमार, मुमताज, जितेन्द्र, शत्रुघ्न सिन्हा आदि कलाकार छलथि। ई फिल्म गुलशन नंदाजीक उपन्यासपर आधारित अछि।

अगर दिलबर की रुसवाई हमें मंजूर हो जाये
सनम तू बेवफ़ा के नाम से मशहूर हो जाये

हमें फ़ुर्सत नहीं मिलती कभी आँसू बहाने से
कई ग़म पास आ बैठे तेरे एक दूर जाने से
अगर तू पास आ जाये तो हर ग़म दूर हो जाये

वफ़ा का वास्ता देकर मुहब्बत आज रोती है

न ऐसे खेल इस दिल से ये नाज़ुक चीज़ होती है
ज़रा सी ठेस लग जाये तो शीशा चूर हो जाये

तेरे रंगीन होंठों को कमल कहने से डरते हैं
तेरी इस बेरुख़ी पे हम ग़ज़ल कहने से डरते हैं
कहीं ऐसा न हो तू और भी मग़रूर हो जाये

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222 1222 1222 1222 अछि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। उर्दूमे दू दीर्घक बीच बला संयुक्ताक्षरकेँ एकटा लघु मानि लेबाक छूट सेहो छै मुदा ई मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय भाषामे नहि भेटत। एहि नज्मकेँ सुनलाक बाद सेहो बुझि सकबै जे "ए" केर उच्चारण "इ" मने "एक" केर उच्चारण "इक" जकाँ छै आ ई उर्दूक विशिष्टता छै।

२

मोहनराज "गगन"

बीहनिकथा

"हरियाणा पंजाबमे फेर अहि बेर कोर्ट रबासि फोरबाक समय सीमा निर्देशित कएने छैक कथी लेँ कीन रहल छह?" राजेश अपन दोस राजू सँ।

"पिछला बरख सेहो दिल्ली मे बन्न कएने रहैक मुदा कहा मानै छैक लोक"

"कथी लोक मानते होली मे इकोफ्रेंडली होली! दियावाती मे शुद्ध बसात केर नाम पर बिन रबासिक दियावाती अकिल सभटा हिन्दू पर छजै आकि आआरो कतौ..?

"हँ होऊ वियाह मुरन हिंदुस्तान पाकिस्तान केर मैच उपनयन सभमे ठीक मुदा दियावाती मे ज्ञान तखन की कहूँ"

"स्वस्थ हवामे सांस लेब' के नैँ चाहइ छैक मुदा मात्र दियावाती मे रोकि..? रबासिक कारखाना बन्न क' न दौऊ"

"चलु छोड़ू नैँ कीनब कोर्टक आदेश छैक मुदा पराली जरा शुद्ध हवा बाँटबाक प्रयास सेहो स्वीकार नैँ"

"से बन्न ने हेतैए नाक रगड़ि मैरि जाऊ" उदास होइति दुनूगोटे मुँह हप कएने बैसि गेल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

राकेश कर्ण

सृजन

अपन लेखनीक संग

एकसरि संवेदना साझी करैत

अहां बिसरि जाइत छी सभटा

कटु वृष्टि आ लोक-बेद

अंतिम अध्याय धरि पहुँचबा लेल

लिखैत छी अहां चिर अद्यतन भूमिका

बिसरि जाइत छी

बिडम्बनाक अनुक्रम

किएक कि अहां अश्रुक स्याही सँ

रंग भर' चाहै छी

समग्र वेदना-प्रसंग आ पात्र मे

अहां ईहो त' नै बिसरि सकैत छी जे

चिर पुरातन कथा सँ फराक होइते

सगरो होइछ जर्जर परंपराक

वक्र दृष्टि

मुदा जँ अहां रच' चाहै छी

धवल परिवेश

तँ ताहि लेल

एकटा पारदर्शी

आरेख खींच' पड़त

ओझरायल रेखाक समानांतर ...

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.प्रभाष अकिंचन- महाकवि लाल दास २. कुमोद रंजन चौधरी

उठु मैथिल चलु मैथिल

१

प्रभाष अकिंचन

महाकवि_लाल_दास

महाकवि पंडित लाल दास

वीरे-तारालाही खडौआ-वास

मैथिली-साहित्यक आकाश-दीप

आइओ फहराईत उच्चाकाश

जन्म-काल अठारह सौ छप्पन

मैथिली-क्राँतिक पडल अरिपन

कुशाग्र-बुद्धिक अग्रदर्शी सपूत

खिलल आंगन दास बचकन

संस्कृत फारसी मैथिलीक जानकार

महाराज दरभंगाक प्रिय पेशकार

प्रशासनिक कौशल में प्रवीणतम

ज्ञान प्रतिभाक अद्भुत अवतार

साहित्य-सृजनक' कएल भंडारण

रमेश्वर-चरित जानकी-रामायण

चण्डी-चरित सावित्री-सत्यवान

स्त्री-शिक्षा सम अतुल काव्यायन

उन्नैस सौ एकैस में महाप्रयाण

ओहि महामानव के कोटि-प्रणाम

अकिंचन कलमस' उच्चभावयुक्त

कायस्थ-ऋषिक शत-शत सम्मान

२

कुमोद रंजन चौधरी

उठु मैथिल चलु मैथिल

उठु मैथिल चलु मैथिल

पाञ्चजन्य के प्रयोग करू

हुंकार भरू शंखनाद स

अपना लेल अपने किछ काज करू

मिथिला के गौरब गाथा

जूनी खाली बखान करू

इतिहास बैन गेला मैथिल

कनी अपन इतिहास पढ़ू

जनक बाबा कैन रहल छैथ

देख मिथिला के दूरदाशा

कोना मैथिल विषैर रहल छैथ

अपन बोली अपन मिठगर भाषा

उठु मैथिल चलु मैथिल ......

....

मिथिला लेल ज मैथिल नई बजता

अर्जुन बैन ज गाण्डीव नई धरता

कलजुग छी ई सुइन लिय यौ मैथिल

अहा के लेल कि कोनो कृष्ण ओता

संघ में शक्ति कलयुग के गुण छै

ई बुझबै लेल कि अहा के गौतम ओता

उठु मैथिल चलु मैथिल

.....

गाम घर सब खाली भ गेल

खेत खलिहान सब गाछी भ गेल

टुकुर टुकुर बाट तकैत छैथ

बड़की काकी बुड़बा काका

गप करै लेल लोग तकैत छैथ

नित्य एक्के चर्च करइ छैथ

सब स पुछथिन कहिया ओता

बड़का बौवा आर नुनु बच्चा

उठु मैथिल चलु मैथिल .....

निमी के मिथिला मिथि के मिथिला

नेतागण एकरा नोइच खेला

जेकरे देखु बुधियारे बढ़ छैथ

चैर गोटे नई कखनो एक संग रहै छैथ

निज स्वार्थ में सब डूइब जीबैत छैथ

अपने स अपने सब लैर मंरै छैथ

उठु मैथिल चलु मैथिल ....

....

जाही ठाम प्रगट भेली सीता मैया

हमहू सब त छी जन्मोंटी वैदेहीया

पेट रोटी लेल बौख रहल छी

बैन क सब परदेशिया भैया

गामक आम काकी बला गाछी

बढ़ मोन होइ अइछ जै हाटक गाछी

गाम स दूर कि कोनो जीब रहल छी

मोन मैर क बुझु त कैन रहल छी

उठु मैथिल चलु मैथिल

- कुमोद रंजन चौधरी

ग्राम- विह्नगर
प्रखंड- पंडौल
जिला - मधुबनी

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.इन्द्रकान्त लाल- कक्का तोर अंगना २.संतोष कुमार राय 'बटोही' -दू टा कविता

१

इन्द्रकान्त लाल

कक्का तोर अंगना

कक्का तोर अंगना,

माँछ गम गम करौ 2 तोर अंगना।

रेहु बुआर छियह आ की भून्ना 2

खुएबह पड़ोसिया के 2 फल दुना

कक्का तोर अंगना..................

दुनू बापूत मिलि बैसल मांझ अंगना 2

हमर ताड़ी हौ 2 तोहर चिखना...

कक्का तोर अंगना............

खेने पिने मस्त रहऽ बनल भोकना 2

औथिन काकी तं 2 खइयह बेलना...

कक्का तोर अंगना... माँछ गम गम करौ तोर अंगना।

२

संतोष कुमार राय 'बटोही' -दू टा कविता

१

कनफुस्सी बिगाड़लक घर

मोन होइए की करू

की बनाउ की धरू

देह कँपैए थर्र-थर्र

कनफुस्सी बिगाड़लक घर

माए गै कोना बसब सासुर
तरकाई भेलै मँहग
मँहग भेलै एस्नो-पाउडर
कनफुस्सी बिगाड़लक घर

खाता खोला क कोनहु फैदा नहि भेल
जे टका आयल से गेल
सासु लड़ैत अछि साँझ-विहंसर
कनफुस्सी बिगाड़लक घर

ननदि मुँह फूलौने रहैत अछि
नीक निकुत सभ अपने खैए
मारै लेल छुटैए देवर
कनफुस्सी बिगाड़लक घर

अतेक पढ़ौलैंह आई ए-बी ए
आब चुल्ही निपबैत अछि
पथाबैए गोबर

कनफुस्सी बिगाड़लक घर

पिया कमैए परदेश

इ जबानी मे आगि लगलै

के बुझतै दरदिया हमर

कनफुस्सी बिगाड़लक घर

२

नौकरी

मोन नहि होइए नौकरी करू

हम कमैत छी दोसर खाइए

एको टा टाका नहि बचैए

घरवाली एतेक रास कहैए

देवता-पितर पूजलहुँ

बाबाधाम काँवरिया बनि गेलहुँ

दिन दूना राति चौगुना

सरकारी अफसर करैत अछि जोड़-घटाव-गुणा

नहि पढ़लहुँ तकर साफल भोगैत छै

दिल्ली,मुंबई,पंजाब खटैत छी

हम कमैत छी तैं हम नौकर

उ हीरो कहाबैत अछि हम जोकर

कारखाना मे काज कके टी बी भेल

गुटखा खाके कैंसर भेल

दोसर कँे नौकरी कके खून पानि भेल

की कहू, की की नहि भेल

इ बड़का मकान मे हमरो हिस्सा छै

इ बैंकक टाका मे हमरो हिस्सा छै

इ कारखाना में हमरो हिस्सा छै

इ गाड़ी मे हमरो हिस्सा छै

यौ उद्योगपति मजदूरी नहि,

हमरा हिस्सा चाही

बड़ि हम सहलहुँ अहाँ केर मारि-गारि

बड़ि भेलै नौकर-मालिक केर खेल

संतोष कुमार राय 'बटोही'

ग्राम-मंगरौना

पोस्ट-गोनौली

प्रखंड-अंधराठाढ़ी

अनुमंडल-झंझारपुर

जिला-मधुबनी

बिहार-847401

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

१ टा गीत आ २७ टा गजल

१

गीत

छागर कटैत रहलै

कनैत कलपैत रहलै

भगवती प्रसन्न भ' गेलीह

लोक सभ बुझैत रहलै |

परम्पराक मंचपर हत्याक खेल

बाघकेर बलि कहियो ने देल गेल

ढोल-पिपही बजैत रहलै

आ नटुआ नचैत रहलै

भगवती प्रसन्न भ' गेलीह

लोक सभ बुझैत रहलै |

सत्य आ अहिंसाक ज्ञान मौन भेल
भरि गाँ तमाशा देखैछ ठाढ़ भेल

लिधुर जे बहैत रहलै
बखरा लगैत रहलै
भगवती प्रसन्न भ' गेलीह
लोक सभ बुझैत रहलै |

कहलनि जे बुद्ध, महावीर आबिक'
सुतलोमे सदिखन रहू जागिक'

हिंसा जे होइत रहलै
विपदा अनैत रहलै
भगवतीक आँखिकेर नोर
क्यो नहि देखैत रहलै|

माउसकें प्रसाद मानि लेल
हर्षमे विषाद सानि देल

धरती फटैत रहलै
ट्रेन पलटैत रहलै
नभमे ई व्याप्त चीत्कार

मौत बनि अबैत रहलै |

गजल

१

काँट हटयबामे लागल छी

बाट बनयबामे लागल छी

आठ बजै छै सभ सूतल छै

साफ़ करयबामे लागल छी

काज कनी करियौ यौ बौआ

ढोल बजयबामे लागल छी

लोक लगा देने छै झगडा

आगि मिझयबामे लागल छी

भाइ कनी अनको दिस तकियौ

पाइ कमयबामे लागल छी

छाँह कमल जाइछ धरतीपर

गाछ लगयबामे लागल छी

पाप बहुत बढलै दुनियामे

प्रेम बढयबामे लागल छी

२

मात्रा क्रम : 22222221

कौआकें कौआ कहि देल

बूझू बड़का गलती भेल

एके घरमे सबहक बास

नै ककरो ककरोमे मेल

मरला बहुतो जन महगीसँ

आ हुनकर वेतन बढि गेल

जुनि पूछू बौआ हमरासँ

दालि कते दिन खेना भेल

सोचै छी जीवन की थीक

सीढी आ साँपक बस खेल

धीया पूता बिनु ई महल

हमराले' बूझू अछि जेल

(चारिम शेरक दोसर पाँतिमे

दूटा लघुकें दीर्घ मानबाक छूट

लेल गेल अछि)

३

मात्रा क्रम : 21-12-222

नोर गरम पीबै छी

भाग्य अपन लीखै छी

टीक अपन नोचै छी

माथ अपन पीटै छी

सोर करू ककरा हम

ठोर अपन सीबै छी

गाछ बनत बड़का ई

बीज ई जे छीटै छी

जोर घटल जाइत अछि

बाँस जकाँ लीबै छी

बाउ अहाँ करबै की

सभक पता टीपै छी

गीत गजल सीखू ने

गारि किए सीखै छी

(चारिम शेरक दोसर पांतिमे

एक टा दीर्घकें लघु मानबाक

छूट लेल गेल अछि)

४

मात्रा क्रम : 2121-22-221

बात एक लागू सभ ठाम

चोर और साधू सभ ठाम

काज काल पाछू रहताह

भोज बेर आगू सभ ठाम

पाप थीक माँगब ककरोसँ

से धियान राखू सभ ठाम

बूढ-सूढ भूखल ने रहथि

घूरि-फीरि ताकू सभ ठाम

बात-बात पर जुनि तमसाउ

मीठ-मीठ बाजू सभ ठाम

प्रेम थीक बड़का उपहार

बेर-बेर बाँटू सभ ठाम

५

किछु लिखबाले' किछु पढबाले'

सदिखन ताकू किछु करबाले'

चानो आकाशक कहइत अछि

शीतलता सभठाँ बँटबाले'

क्यो जाइत अछि क्यो अबइत अछि

नित नव-नव पथपर चलबाले'

देखल दुनियामे सभ नाटक

किछु हँसबाले' किछु कनबाले'

फूलो सभ दिन नव-नव फूलय

जीवनमे करुणा भरबाले'

६

फाँड़ बान्हिक' सोझ बाटपर चलबाले'

बुच्ची छथि तैयार समयसँ लड़बाले'

महिषासुरले' आइ स्वयं दुर्गा बनती

मुक्त धराकें बलतकारसँ करबाले'

हे सीते जुनि स्वर्ण-मृगाकेर लोभ करू

घूमि रहल मारीच अहाँकें ठकबाले'

अप्पन लछुमन-रेखाकें चीन्हू सभक्यो
आयल अछि रावण सीताकें हरबाले'

केहेन भेषमे कत्त'-कत्त' अछि रावण
चलू चलैछी आत्म-निरीक्षण करबाले'

७

रास रचलक ई दुनिया, हमर दुनिया
गीत गजलक ई दुनिया, हमर दुनिया

शांति तकलक ई दुनिया, हमर दुनिया
फूल कमलक ई दुनिया, हमर दुनिया

लोक सूतल जे छल भांग खाक' बहुत
नाक दबलक ई दुनिया, हमर दुनिया

लोक जागल जे छल नाचमे बाझल
नाम गनलक ई दुनिया, हमर दुनिया

लोक टूटल जे छल भीड़मे छूटल
ताकि अनलक ई दुनिया, हमर दुनिया

लोक करजामे डूबल हजारो जत'

हाल जनलक ई दुनिया, हमर दुनिया

लोक भागल जे छल रूसि कय गामसं

नेह बँटलक ई दुनिया, हमर दुनिया

(मात्रा-क्रम : 21222-221222)

(तेसर शेरमे दू टा लघुकें दीर्घ मानल गेल)

01.01.2018

८

गजलक धुनिमे मातल छी

ओ बूझै छथि पागल छी

सत सबहक मुंहपर कहलौं

तें भरि गामक बारल छी

बाढिक लूटल छी अपने

हम रौदीके मारल छी

ऐ खेलाके यैह नियम

सभ जीतल सभ हारल छी

अपनहिकें हम नहि जनलौं

कोना कहबै जागल छी

सीखै छी किछु-किछु सदिखन

नहि हम बाटक थाकल छी

ई डोरी प्रेमक डोरी

जैमे हम सभ बान्हल छी

एकहि आमक कतरा हम

ईश्वर लग नहि बाँटल छी

(मात्रा-क्रम : 2222222)

(चारिम शेरमे दू टा लघुकें दीर्घ मानल गेल)

९

एत्ते बात सुनतै के

एत्ते तूर धुनतै के

एत्ते पानि बहितै नै

एत्ते तूर धुनतै के

ई रस्ता त सबहक छै

एत्ते तूर धुनतै के

एत्ते मूस के मारत

एत्ते भूर मुनतै के

एत्ते माछ के पकड़त

एत्ते जाल बूनतै के

एत्ते रास पढतै के

पढ़ियो लै त गुनतै के

१०

दीनता अशिक्षा और अन्हार अछि मिथिलामे

अनगिनती नोरक टघार अछि मिथिलामे

गाम बहुत अछि बिला गेल कोसीक बाढ़िमे

अनगिनती सूखल इनार अछि मिथिलामे

अल्हुआ मडुआ आ बिसाँढ एखनहु खेबाले'

सुतबाले' एखनहु पुआर अछि मिथिलामे

गाम छोड़िक' लोक भगैए दिल्ली मुंबई

किछुए अनार लाखो बिमार अछि मिथिलामे

कतेक योजना शापित एखनहु जहां-तहां

एखनहु रामक इंतिजार अछि मिथिलामे

कोन कृष्ण कहिया एथिन से के जानय

दुख केर गोबर्धन पहाड़ अछि अछि मिथिलामे

११

दिन के दिन बजबोमे छै बड़का झंझट

और चुप्प रहबोमे छै बड़का झंझट

कहथि पिता भरि राति पानिमे ठाढ़ रहू
एत्ते दुख सहबोमे छै बड़का झंझट

सबहक तील चाउर खा' सोचथि नेताजी
पांच साल बहबोमे छै बड़का झंझट

ओ पच्छिमकें पूब कहथि अहूँ 'हं' कहियौ
संग हुनक चलबोमे छै बड़का झंझट

दान दक्षिणा जप तप दंड-प्रणाम करू
कतहु शिष्य बनबोमे छै बड़का झंझट

सभ चाहै छथि घर बनितै किछु नव ढंगक
आ पुरना ढह्बोमे छै बड़का झंझट

बहर काफिया और रदीफ मिलान करू
भाइ गजल कहबोमे छै बड़का झंझट

(मात्रा क्रम :2222 2222 222)
दू टा अलग-अलग लघुकें एक
दीर्घ मानल गेल अछि.

१२

अपन नाम परिचय आ घर त्यागिक' हम
कहू की सोचै छी एत' आबिक' हम

सभठाँ अहाँकेर संगे छी हमहूँ
आब जायब कतयसं कतय भागिक' हम

ओ सभ गाछ ब'रक सुखा गेल असमय
त सुस्ताएब जा कय कतय थाकिक' हम

सत बात बाजी से होइछ सिहन्ता
से चुप छी अहाँ केर मुंह ताकिक' हम

सपनेमे देखल करब हम अहाँकें
निकलि जाएब भोरे गजल गाबिक' हम

(मात्रा क्रम : 2222 2222 22)
दू टा अलग-अलग लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि |

१३

फुनगीपरसं खसलाक बाद और हाथ-पैर टुटलाक बाद
लोक मुरती बनाओत अहांकेर चितापर चढलाक बाद

कियो नै करत अहाँक कहल मुदा फूल चढ़ाएत मुरतीपर
क्यो लागि जाएत मुरती तोडबामे मुरती बनलाक बाद

के चीन्हत आब अहाँ जी एम छलहुँ आ कि डी जी एम
लोक भ' जाइए ग्राहक कि मरीज कुरसीसं उतरलाक बाद

बड़ी काल धरि एसगरमे करैत रही साहोर ! साहोर !!
भाइ आब मोन लगैए हल्लुक तूफानसं गुजरलाक बाद

सुख भेटि सकैए किछु कालले' पहाड़पर अथवा जंगलमे
मुदा आनन्द भेटत अपन गाम अपन घ'र पहुँचलाक बाद

गम-गम कर' लगैछै सभटा घ'र आंगन टोल गाम आ शहर
गाछी सभ लाग' लगैछै सोहनगर आम मजरलाक बाद

सजबैत रहू अपनाकें सभदिन पवित्रताक आभूषणसं
गाछी सभ लाग' लगैछै बड भुताहि आम झखडलाक बाद

विधान छै कनियाँक लेल महफाक ओहारक आ कहारक
गजलहु बनैछ गजल काफिया आ बहरमे उतरलाक बाद

(मात्रा क्रम : 2222 2222 2222 2222)
दूटा अलग-अलग लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि |
22.10.2018

१४

बथान हमर नै छी, दलान हमर नै छी

ई दस कोठलीके मकान हमर नै छी

पदबी हमर ओगरबाह एहि गाछीक
खेत खोपड़ी और मचान हमर नै छी

लोकक लहासपर फुनगीपर चढ़बाले'
लुत्ती लगबैत ई परान हमर नै छी

बलतकार हत्या तलाक आ मोकदिमा
ई विधि हमर नै छी विधान हमर नै छी

पुत्र बिना मोक्षकें कहैत हो असंभव
त शास्त्र हमर नै छी, पुराण हमर नै छी

मात्रा-क्रम : 2222 2222 222
दू टा लघु कें एक दीर्घ मानल गेल अछि |

१५

बेर-बेर बौआ खसै छी किए
अहाँ धडफडायल चलै छी किए

अहाँ चुप्प र'हू कोनो बात नै
अहाँ रातिकें दिन कहै छी किए

'सरस''चन्द्रमणि'कि 'रवीन्द्र'क सुनाउ

ejournal 'विदेह' २६१ म अंक ०१ नवम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १३१ अंक २६१) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

अहाँ भोजपूरी गबै छी किए

छुबि कान देखू हकमै किए छी
कौआके पाछाँ भगै छी किए

सूतल जे मन अछि तकरा जगाबी
अनकासं तुलना करै छी किए

संतान छी हम परमात्माकेर
तखन मृत्युसं हम डरै छी किए

(मात्रा क्रम :222222222)

1.दूटा अलग-अलग लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि |

2.पांचम शेरमे 'जे'आ 'सं' कें क्रमशः लघु आ दीर्घमे गिनती कैल गेल अछि |

१६

लोक दौगल जा रहल अछि सभ्यताक बिहाड़िमे
गाम छूटल जा रहल अछि सभ्यताक बिहाड़िमे

ठाढ कत्ते दिन रहत ई चार बालुक भीतपर
खेत खूनल जा रहल अछि सभ्यताक बिहाड़िमे

शहरमे की सड़कपर की अपन घ'रहिमे एखन

लोक लूटल जा रहल अछि सभ्यताक बिहाड़िमे

श्रद्धा करुणा और ममता स'भ किछु सभठाँ कमल
पाइ चूनल जा रहल अछि सभ्यताक बिहाड़िमे

संस्कृति पड़ि गेल आइ उक्खड़ि समाठक बीचमे
प्रेम कूटल जा रहल अछि सभ्यताक बिहाड़िमे
(मात्रा क्रम : 2222 2222 2222 2)
दूटा अलग-अलग लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि |

१७

रंग-विरंगक सभ फुलवारी नीक लगैए
दुश्मन-दुश्मनमे भैयारी नीक लगैए

नीक लगै छनि हुनकाई तिलकोरक तड़ुआ
हमरा अरिकोंचक तरकारी नीक लगैए

सबहक जीवनमे आनंदक सपना देखी
लिखबा आ पढबाक बीमारी नीक लगैए

नहि सोहायल हमरा कहियो चौका-छक्का
हमरा गीत-गजल संग यारी नीक लगैए

१८

एना करब हम ओना करब
आ धन कहुना हम जमा करब

सभटा संगे नेने जायब
त जुनि पूछू से कोना करब

स्वयंसं लड़बै जीतब दुनिया
से पाइ पैरबी बिना करब

सबहक सोझाँ मूंह दुसै छी
की की सभ आगाँ अहाँ करब

लगा कबाछु कहै छथि झा जी
हे यौ ठाकुरजी क्षमा करब

सभ पंडित छथि सभ बूझै छथि
सैह पाएब जे जेना करब

पिपही-ढोल बजाकय अनलौं
की आब कना कय बिदा करब

(मात्रा क्रम :2222 2222)

दूटा अलग-अलग लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि |

१९

कोनो गाछक छाहरि तकबाक संस्कार नै अछि

एखने कतहु पसरिक' सूति रहबाक बिचार नै अछि

पहिल कर्तव्य अछि अपन तन-मनकें ठीक राखब

हमरा अखन बीमार पडबाक अधिकार नै अछि

लदै छी क्रोध काम लोभ मोह आ अहंकारसं

कोनो अस्पतालमे एहि सबहक उपचार नै अछि

सबहक हाथमे छै स्मार्ट फोन बेटा छै हाकिम

गाममे आब लोहार सोनार कि कहार नै अछि

देखिते-देखिते खाली जगह भ' जाइ छै पंचमहला

सुरक्षित आब कोनो खेत-पथार नै अछि

हम ताकि रहल छी सभ स्त्रीमे देवी आ पुरुषमे देवता

हमरा और कोनो तीर्थमे घुमबाक नियार नै अछि

एकटा पहलवान आ हजारटा पैर घीच'बला

एनामे कोनो समाजक उद्धार नै अछि

कतहु कियो छीनि नै सकैए हमर सुख-संपत्ति

असलमे हमर स्थायी पता ई संसार नै अछि

२०

मात्रा क्रम :

2 2 2 2   2 2 2 2   2 2 2 2   2 2 2 2

अज्ञानताक और अन्यायक एतेक कथा गढ़ैत काल
बहुत कानल हेताह व्यासजी महाभारत रचैत काल

जरैत रहि गेल लोभ आ अहंकारक आगिमे जीवनभरि
दुर्योधन किछु नहि ल' जा सकल संगे दुनियासं चलैत काल

हम सभ लीखैत रहैत छी अपन भाग्य अपन सोचसं सदिखन
द्रौपदी नहि सोचलनि ई बात दुर्योधनपर हंसैत काल

मंगनीमे भेटल ई सम्मान एतेक महग सिद्ध हैत
से नहि बुझलनि कर्ण अंग देशक मुकुट धारण करैत काल

नहि द' सकलीह अपन संतान सभकें सदाचारक आशीष
गांधारी मरि गेल छलीह आँखिपर पट्टी बन्हैत काल

अपमानक बदला उचित छल आत्मज्ञानक शस्त्रक उपयोग
चुकि गेलाह गुरुवर अपन शिष्यसं गुरुदक्षिणा मंगैत काल

उठौने एलाह तीन-तीनटा राजकुमारीकें काशीसं
पुरुष-सिंह बनि गेल छलाह बिलाइ घरमे कुकुर भुकैत काल

प्रतीक्षा होइत रहैत अछि शंख घड़ीघन्टा आ प्रसादक

सभ रहैत अछि सूतल सत्य नारायणक कथा सुनैत काल

अन्हड़ उजाड़ि दैत अछि कते घर तोड़ि दैत अछि कते गाछ
धिया-पुताकें नीक लगै छै गाछीमे टिकुला बिछैत काल

फूलो तोड़ब थिक बलतकार गाछक संगे से के मानत
ढोल-पिपही बजबैत रहै छी हम सभ छागर कटैत काल

सत्यकेर अवहेलना हरि लैत अछि आत्माक सुख आ शान्ति
से नै बुझलनि देवी कुंती शिशुकें धारमे छोड़ैत काल

२१

बाघ जकां लोक आ हुराड़ जकां लोक
गाम-गाम भेटता सियार जकां लोक

जहां-तहां पोखरि-इनार जकां लोक
सागर नदी आओर धार जकां लोक

खाधि जकां लोक किछु आरि जकां लोक
देखने छी नार आ पुआर जकां लोक

सभठाँ करथि मोल-भाव नाप-तौल
भेटि जेता हाट आ बजार जकां लोक

रूसलकें बौंसय भूखलकें नोतय
जामुन लताम कुसियार जकां लोक

गंगाक ज'ल-सन किछु लोक भेटला
भेटला हिमालय पहाड़ जकां लोक

लोकेले' जीबय आ लोकेले' जान देत
गेंदा गुलाब हरसिंगार जकां लोक
(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण-14)

२२

गीत लीखि-लीखिक' गजल लीखि-लीखिक'
ह'म मौन भेल छी नोरेमे भीजि-भीजिक'

लोकेकें देखि-देखि प्रेम हम करैत छी
लोककें ठकैत छी लोकेकें देखि-देखिक'

संस्कृतिक ऊपर सभ्यता सवार भेल
फ्लैट हम किनैत छी खेत बेचि-बेचिक'

क्यो खुशीसं जान दैत अछि मातृभूमिले'
क्यो मगन रहैए देशेकें लूटि लूटिक'

सत्यक पराजय 'असत्यमेव जयते'

घोषणा करैछ कियो ताल ठोकि-ठोकिक'

एना किए ओना किए एहेन किये भेलै

राति-दिन झकैत छी यैह सोचि-सोचिक'

(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण-15)

२३

अहंकारमे सदिखन छी

अहाँ कंस छी रावण छी

अहाँ बात सबहक काटी

अहीं बाउ दुरजोधन छी

महावीर मनभावन छी

अहाँ राम आ लछुमन छी

अहाँ चुप्प रहि जाइत छी

महाधीर मनमोहन छी

जते दृश्य अछि दुनियामे

महाभारतक जीवन छी

हमर मोन नीपल आंगन

अहाँ ओहिमे अरिपन छी

अबै राति आ दिन अहिना

कते नीक आयोजन छी

(सभ पांतिमे मात्रा क्रम-1221-2222)

२४

हुनका सोझाँ लिबल ने भेल

'प्रेम करैछी' कहल ने भेल

हमरा मोनक चैन चोरेलौं

मुदा अहाँकें जहल ने भेल

छलै अशरफी ओत्तै गाडल

हमरा जैठाँ रहल ने भेल

केश माथमे जते,तते दुःख

गन' चाहलौं गनल ने भेल

ठोहि पाड़िक'कियो कनै छल

घ'र बंद क' पडल ने भेल

नोरहिसं लिखने छलीह ओ

चिट्ठी हमरा पढल ने भेल

बिना बहरके पद्य ‘अनिल’
कविता भेलै गजल ने भेल

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

२५

युद्ध करू जुनि शोक करू
हे अर्जुन जुनि सोच करू

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रमे छी
पापक तीब्र विरोध करू

मित्र कियो नै शत्रु कियो नै
बुझियौ और संतोष करू

जीतू भोगू सुख धरतीक
अथवा स्वर्गक भोग करू

अहाँ आतमा अविनाशी छी
तन आ मोनक योग करू

सत्य और शांतिक जय हो
नूतन नित्य प्रयोग करू

जय हो जय हो पवित्रता

आउ एखन उद्घोष करू

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

२६

वेद-पुराणक महिमा सभटा बूझल अछि

मुदा लोक हमरे करतबसं रूसल अछि

राति आ दिन ओझराएल रहै छी हम जैमे

इहो जाल त अपनहि हाथक बूनल अछि

भूमि-भवन गहना-गुडिया एफ डी सभटा

सोचि रहल छी की अरजल की लूटल अछि

ह्रदय कहैए ई अन्हार हटतै एकदिन

सपता-विपताकेर कथा सभ सूनल अछि

जे जागल अछि ओकरा खातिर भरि दुनिया

'अनिल' ओकर की जे सपनेमे डूबल अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-17)

२७

रावणकेर संहार केलौं अपने मनमे

रामक हम दर्शन कयने छी जीवनमे

पढबा-लिखबामे आनंद अबैत रहल

मोन रमल नै कतौ और किछु अर्जनमे

दूर रहैत एलौं सभदिन चौका-छक्कासं

लागल रहलौं शब्दक सागर-मंथनमे

माए बाबू दादी दादा नानी नाना मामी मामा

सभ क्यो छथि हमरा संगे शुभ चिंतनमे

कोना बिसरबै राति दिसंबर सोलहके

शाप सुनै छी निरभयाक ओइ क्रंदनमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह नूतन अंक बालानां कृते

विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' आ आशीष अनचिन्हारक बाल गजल

१

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

बाल गजल

हम्मर प्राण समान अछि

जगमग हिन्दुस्तान अछि

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाइ

आँखि नाक मुंह कान अछि

हमरे ई गुरुग्रंथ गीता

बाइबिल आ कुरान अछि

ई दुनिया आंगन हमरे

कहने वेद-पुराण अछि

ई धरती मैया सबहक

सभले' सूरुज चान अछि

हमरे सभले' पानि-हवा

मकै गहुम आ धान अछि

सत्य, अहिंसा और करुणा

ई हम्मर पहचान अछि

(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण-10)

२

आशीष अनचिन्हार

बाल गजल

बाल गजल

केहन काहन ढुलढुलिया बच्चा
फेकल फाकल फुलफुलिया बच्चा

ढुनमुन ढुनमुन गुलगुलिया बच्चा
हुलबुल हुलबुल हुलबुलिया बच्चा

छन छन कूदै थुलथुलिया बच्चा
सदिखन बूलै बुलबुलिया बच्चा

छै इम्हर उम्हर किम्हर किम्हर
चुलबुल चुलबुल चुलबुलिया बच्चा

की नवका आ की पुरना पुरना
चीन्है सभकेँ भुलभुलिया बच्चा

सभ पाँतिमे 222-222-222 मात्राक्रम अछि। सुझाव सादर आमंत्रित अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु